साधना और सेवा का संगम

वात्सल्य निर्झर

50/-

फरवरी 2026
विक्रम सम्वत् 2082

वात्सल्य रत्न

Rajluxmi Samvid Gurukulam Sainik School

Nalagarh (Himachal Pradesh) | C.B.S.E. Residential Boys School | (Class VI to XII) Science and Commerce

We bring out the winner in you

How We Stand Out ?

- Regular Sanskaram Classes
- Smart Classes and Experienced
- Teachers
- Indoor and Outdoor Games
- Shooting, Swimming, Horse Riding
- Integrated program for NDA,JEE and NEET preparation
- Communication Classes
- AC Hostels
- Pollution Free Environment
- Well Equipped Labs
- Healthy and Vegetarian Food

Contact for Admission

Bariyan, Tehsil : Nalagarh, Dist. : Solan (H.P.) 174101

Call us: 7876004251 & 7876430935, www.samvidgurukulam.com

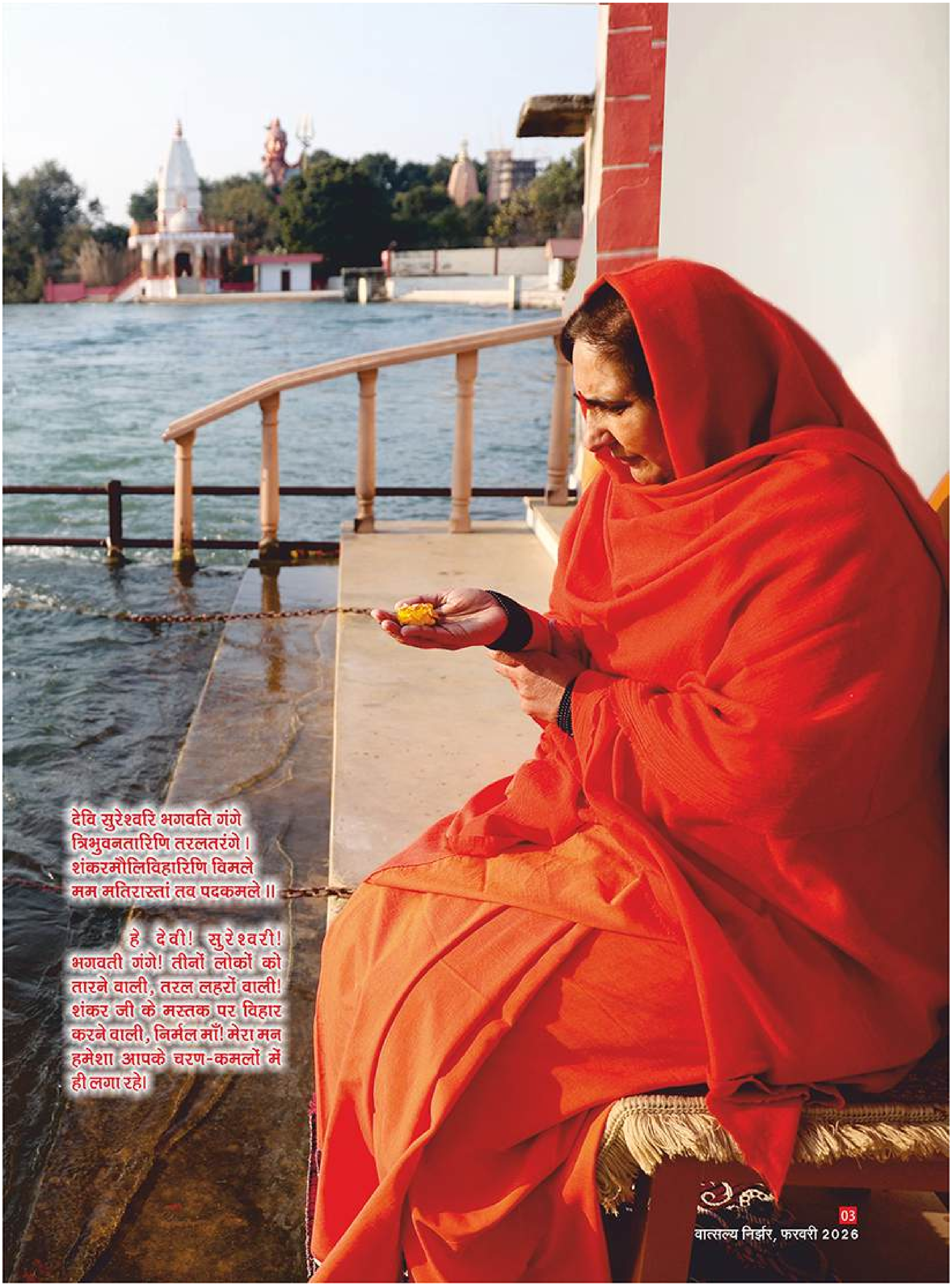

देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे
त्रिभुवनतारिणि तरलतरंगे ।
शंकरमौलिविहारिणि विमले
मम मतिरास्तां तव पदकमले ॥

हे देवी! सुरेश्वरी! भगवती गंगे! तीनों लोकों को तारने वाली, तरल लहरों वाली! शंकर जी के मस्तक पर विहार करने वाली, निर्मल माँ! मेरा मन हमेशा आपके चरण-कमलों में ही लगा रहे।

साधना और सेवा का संगम

वात्सल्य निर्झर

वर्ष 23, अंक 1, फरवरी 2026

मुख्य संरक्षक
परम पूज्य महामण्डलेश्वर अनन्तश्री विभूषित
युगपुरुष स्वामी परमानन्द गिरि जी महाराज

संरक्षक
परम पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी

प्रधान सम्पादक
संजय गुप्ता

प्रकाशक
परमशक्ति पीठ द्वारा संजय गुप्ता

सम्पादकीय मण्डल
देवेन्द्र शुक्ल एवं स्वास्तिका

प्रधान कार्यालय
वात्सल्य प्रकाशन, परमशक्ति पीठ
लव–102, अग्रसेन आवास,
66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, दिल्ली –110092
दूरभाष : 011 22238751
मोबाईल सम्पर्क : 99588 85858
ई मेल : info@vatsalyagram.org
वेबसाइट : www.vatsalyagram.org

शाखा कार्यालय
वात्सल्य ग्राम
मथुरा–वृन्दावन मार्ग, पोस्ट–वात्सल्य ग्राम
वृन्दावन (उ.प्र.) 281003

प्रकाशक एवं सम्पादक संजय गुप्ता द्वारा
परमशक्ति पीठ के लिए
हरिओम त्यागी, ए.आर.पैकटेक प्रा.लि.,
आई–23, बेसमेंट, सेक्टर–9, नोएडा, उ.प्र. से मुद्रित एवं
परमशक्ति पीठ,
लव–103, 66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार,
पटपड़गंज, दिल्ली से प्रकाशित

वात्सल्य निर्झर में प्रकाशित लेख एवं रचनाएँ उनके लेखकों के विचारों की अभिव्यक्ति हैं। अतः उनसे सम्बन्धित किसी भी विवाद के लिए लेखक अथवा रचनाकार ही उत्तरदायी रहेंगे।

त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देवी जननी परा
परमशक्ति पीठ

अन्तर्यात्रा

06 अपने ही मन से दुखी हो तुम
08 भक्ति प्रदर्शन का नहीं, दर्शन का विषय है
10 आधुनिक महाभारत का युद्ध...
12 भक्ति–योग–वेदान्त साधना शिविर
15 आत्मावलोकन सबसे बड़ी साधना
17 दैनिक उपासना एवं जीवनचर्या
29 धर्म संस्कृति
30 युवाओं के लिए

गोस्वामी श्री तुलसीदास जी कृत
मानस मोती

बोले लखन मधुर मृदु बानी। ग्यान बिराग भगति रस सानी॥
काहु न कोउ सुख दुख कर दाता। निज कृत करम भोग सबु भ्राता॥
-अयोध्याकाण्ड

लक्ष्मणजी ज्ञान, वैराग्य और भक्ति के रस से सनी हुई मीठी और कोमल वाणी बोले -'हे भ्राता! कोई किसी को सुख-दु:ख देने वाला नहीं है। सब अपने ही किये हुए कर्मों का फल भोगते हैं।'

अपनी बात...

- देवेन्द्र शुक्ल

'अखिल भारतीय वात्सल्य रत्न' के प्रथम अलंकरण से विगत 18 जनवरी को पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के कर कमलों द्वारा प्रख्यात नेत्र चिकित्सक डॉ.श्याम अग्रवाल को विभूषित किया गया। अवसर था वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन के 'प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय' में आयोजित निःशुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविर के समापन समारोह का।

आज से लगभग 36 वर्ष पहले श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति आंदोलन अपने चरम पर था और अयोध्या में 6 दिसंबर 1992 की घटना के बाद यह एक लम्बी न्यायालयीन प्रक्रिया में चला गया। इस आंदोलन की प्रमुख ऊर्जाओं में से एक रहीं पूज्या साध्वी ऋतम्भरा जी को भी लगभग इसी समय ईश्वर ने अपनी एक विशिष्ट योजना के लिए चुन लिया।

हम सब जानते हैं कि इसके बाद कैसे उनके पावन मार्गदर्शन में समाजसेवी संस्था 'परमशक्ति पीठ' की स्थापना हुई फिर यशोदा-श्रीकृष्ण की भावभूमि पर 'वात्सल्य ग्राम' ने आकार लिया। धीरे-धीरे वहाँ अनेकों सेवा प्रकल्पों ने जन्म लिया, जिनसे समाज के जरूरतमन्द नवजात बच्चों, महिलाओं एवं वृद्धा माताओं को वहाँ एक पारिवारिक आश्रय प्राप्त हुआ।

पूज्या दीदी माँ जी कहती हैं कि 'सेवा बताई नहीं जाती, वो तो ढूँढ ली जाती है।' बहुत आसान है अपनी कार्यकुशलता को व्यवसाय में बदलकर धनी-मानी हो जाना परन्तु बहुत कठिन है उसे निःस्वार्थ सेवा के कार्यों में समर्पित कर देना। मुम्बई निवासी डॉ.श्याम अग्रवाल ऐसे है एक उदार व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने दीदी माँ जी के उपदेशों को अपने जीवन में सार्थक किया। नेत्र चिकित्सा के क्षेत्र में वे चार दशकों से अहर्निश कार्यरत् हैं। समाजसेवा का संस्कार उन्हें पारिवारिक परम्परा से मिला। उनके पिता श्री चन्द्रभान जी विश्व हिन्दू परिषद के माध्यम से हिन्दू जनजागरण और सेवा में सन्नद्ध रहे। यही सुसंस्कार डॉ.श्याम जी को घुट्टी में प्राप्त हुआ।

मायानगरी मुम्बई में तमाम जीवन संघर्षों के बीच उन्होंने नेत्र चिकित्सा विज्ञान की उच्च शिक्षा प्राप्त करके एक कुशल आई सर्जन के रूप में ख्याति प्राप्त की। श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति आंदोलन के समय उनका जुड़ाव साध्वी ऋतम्भरा जी से हुआ, जो तब तक अपनी ओजस्वी वाणी के माध्यम से कोटि-कोटि हिन्दूजनों के हृदयों में उतर चुकी थीं। वृन्दावन में वात्सल्य ग्राम की स्थापना के साथ ही हिन्दुत्व की ज्वाला दीदी ऋतम्भरा, नन्हें नवजात बच्चों की 'दीदी माँ' में रूपान्तरित हो गईं। वात्सल्य ग्राम की इस पावन भूमि पर अनेक सेवाकार्यों के बीच डॉ.श्याम अग्रवाल ने भी एक सेवा ढूँढ ली। उन्होंने दृढ़ संकल्प किया कि अब ब्रजमंडल और दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्रों में किसी भी मोतियाबिंद रोगी को आर्थिक अभाव के कारण नेत्र ज्योति खोने नहीं देंगे। छोटी-छोटी व्यवस्थाओं के बीच यहाँ मोतियाबिन्द ऑपरेशन के शिविर आयोजित होना प्रारंभ हुए।

डॉ.श्यामजी के भीष्म संकल्प ने ही वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में 'प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय' का सृजन किया। एक अत्याधुनिक ऑपरेशन थियेटर भी इसमें बनाया गया। प्रतिवर्ष दो-तीन की संख्या में आयोजित होने वाले आई कैम्प मौसम की अनुकूलताओं के साथ अब प्रायः हर दूसरे माह आयोजित होने लगे। डॉ.श्याम जी अपने साथ मुम्बई से आठ-दस अनुभवी नेत्र चिकित्सकों एवं पैरामेडिकल टीम भी साथ लाते। यहाँ तक कि लगभग तीन सौ की संख्या में होने वाले मोतियाबिन्द ऑपरेशनों के अनुमानतः आठ-दस लाख रुपयों के बजट के लिए वो किसी प्रायोजक को भी साथ ले आते।

मतलब, सारी व्यवस्थाएँ स्वयं ही जुटाना। दूरदराज गाँवों के वो लोग इन शिविरों में आते, धन के अभाव में जिनकी आँखों की रोशनी धीरे-धीरे अंधकार में बदल रही होती। धुंधला गई आँखों के साथ वो किसी का हाथ पकड़कर आते। पता नहीं अब आँखें पहले जैसी होंगी या नहीं? तमाम रोगियों की इसी आशंका के बीच डॉ.श्याम और उनकी टीम तन्मयता के साथ उनके ऑपरेशन करती। ऑपरेशन के अगले दिन जब आँख पर से पट्टी हटाई जाती तो मरीज चहक उठते -'अरे वाह डॉ. साहब! मुझे तो अब एकदम साफ दिख रहा है।'

बस यही वो शब्द हैं, जो डॉ.श्यामजी के इस नेत्रयज्ञ में आहुति मंत्रों जैसे गूंजते हैं। मैंने स्वयं ऐसे एक-दो कैम्पों को कव्हर किया है। बिना कुछ खाये पिये सारा दिन उनकी पूरी टीम ऑपरेशनों में लगी रहती है। सूरज ढलते-ढलते यह आँकड़ा तीन सौ के अंक को छू चुका होता है। सभी डॉक्टर्स की तन्मयता इतनी कि आज तक सम्पन्न हो चुके पच्चीस हजार ऑपरेशन्स में से एक भी 'फेल' रिपोर्ट नहीं हुआ।

डॉ.श्याम जी ने अपने इस सेवायज्ञ में अपनी अगली पीढ़ी को भी जोड़ लिया है। डॉ.आरती अग्रवाल उनकी बेटी और मुम्बई की प्रख्यात आई सर्जन हैं। एक करुणामयी और सेवाभावी डॉक्टर के रूप में वो बिलकुल श्यामजी का रूपान्तरण हैं। पूज्या दीदी माँ जी के सेवाभाव को सार्थकता के धरातल पर उतारने वाली इस पूरी टीम के योगदान का वर्णन करने में यह छोटा सा कॉलम सक्षम नहीं है। वास्तव में यह अनुपम सेवाकार्य शब्दों से परे एक गहरी भावानुभूति है।

डॉ.श्याम अग्रवाल सचमुच 'वात्सल्य रत्न' हैं। अन्यथा कितने ऐसे डॉक्टर्स होते हैं जो आज के इस व्यावसायिक युग में अपना व्यवसाय छोड़कर मुम्बई से इतनी दूर वात्सल्य ग्राम के आई कैम्पों में चले आएँ। धन्य हैं डॉ.श्याम जी, उनके सभी साथी डॉक्टर्स और पैरामेडिकल टीम जो मोतियाबिन्द रोगियों की निःशुल्क सेवा में अपने सहयोग समर्पित करते हुए अपना जीवन सार्थक कर रहे हैं। डॉ.श्याम जी बड़े ही उदार भाव से इस सम्मान को अपनी पूरी टीम को समर्पित करते हैं।

अपने ही मन से दुखी हो तुम

- युगपुरुष स्वामी परमानन्द जी महाराज

आपको मनुष्य का शरीर मिला है। इसमें एक खूबी है कि जो चीज अनुभव में नहीं आती, उसको भी अनुभव कर सकते हैं। जानवर को जो अनुभूति होती है, जो अनुभव होते हैं बस उतने को ही वो सत्य मानता है। उसके पास किसी अतींद्रिय सत्य को अनुभव करने की क्षमता नहीं होती। एक चिड़िया शीशे में चोंचे मारती है। उसको यह समझ में नहीं आ पाता कि यह मेरी छाया है और मैं इस छाया से अलग हूँ। उसको केवल प्रतीती होती है कि सामने एक और चिड़िया है। जो प्रत्यक्ष है उसको ही वो सत्य मानकर शीशे में चोंचे मारती है। चिड़िया अंडे देती है, अपने बच्चों को पालती है, तो ये नहीं कह सकते कि उसे अक्ल नहीं है। सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास भी सभी जीवों को लगती है।

देखा जाए तो हम भी जन्म से अनुभव के मामले में लगभग जानवर हैं। दर्द का अनुभव सबको होता है। शरीर के अनुपात में थोड़ा सा हेरफेर होगा। जैसे नमकीन किसी को थोड़ा ज्यादा नमकीन अच्छा लगता है किसी को थोड़ा कम। इसी तरह धूप है, सर्दी है, भूख प्यास है। यह ज्यादा होती है तो सबको बुरा लगता है। हमने कई गायों को देखा यदि दूध पीने का पिलाने का टाइम आ जाए और बछड़ा ना हो तो गाय बोलने लगती है। उसको एक जरूरत मालूम पड़ती है। ऐसे ही कई जानवरों को जब भूख लगती है तो वो भी बोलते हैं। पता चलता है कि इसकी कोई जरूरत है।

तो देखो इच्छाएँ समान हैं, इंद्रियाँ समान है, सुख दुःख के अनुभव समान हैं। यदि कभी तुमको ऐसा लगे कि गुरुजी को इन सबका अनुभव नहीं होता तो कुछ अधिकर देर तक उन्हें धूप में बैठा देना, ठंडी में बैठा या भोजन में अधिक नमक डाल देना, फिर देखना कि क्या वो खुश होते हैं। दूसरी बात, हर व्यक्ति और जानवर एक अपना अलग अस्तित्व रखता है और वो अपने सुखी होने की कोशिश करता है। हमने बंदरिया को देखा कि वो अपना बच्चा जिसे छाती में लिए रहती है, खुद उसे खिलाती है, दूध पिलाती है परन्तु सामने से कोई दाने फेंक दे और उसका बच्चा खाने लगे तो वो उसे डरा कर हटा देती है।

इसी तरह से तुम अपने पति से प्यार करती हो, पति तुम्हें प्यार करता है, पुत्र पिता को प्यार करता है, पिता पुत्र को प्यार करता है, तुम मालिक को प्यार करते हो और मालिक तुम्हें प्यार करता है परन्तु इन सबको जब एक दूसरे से कुछ तकलीफ होती है तो आपस में लड़ जाते हैं। क्यों? क्योंकि उनको परस्पर दुःख हुआ। ध्यान रखना तुम किसी को क्यों डाँटते हो? तुम्हें कोई-न-कोई दुःख हुआ, उससे कोई-न-कोई नुकसान हुआ, उससे वह अलग है। तुम्हारा बेटा है पर तुम अलग हो बेटा अलग है, बेटे को फिर तुम ही तकलीफ देते हो, अपने को तुम तकलीफ नहीं देना चाहते। यदि अपने को कोई तकलीफ दे तो हम उसको डाँटते हैं, हटा देते हैं, नौकर बदल देते हैं, तलाक देते हैं, पत्नी को जला देते हैं, बेटे को मार देते हैं, पिता को बेटा मरवा देता है। क्यों? क्योंकि वो अलग है, उसका सुख अलग है, उसका मान अलग है, उसकी इंद्रियाँ अलग हैं। जब मेरा प्रश्न आता है तो मैं दूसरे की परवाह नहीं करता। जिस पत्नी से, पति से, बेटे से किसी को दुःख होता है वो अलग कर देते हैं, अलग रहने लगते हैं। आप तो ऐसा कभी नहीं कर सकते? बोलो। वो एकदम वाला नहीं, थोड़ी देर को अलग हो जाओगे, अलग कहीं चले जाओगे, आपसी बोलचाल बन्द कर दोगे। जब हम किसी से दुखी होते हैं तो बोलना बंद कर देते हैं। खैर, ये भी हमेशा के लिए नहीं होता। कुछ दिनों के बाद बोलचाल फिर शुरू हो जाती है क्योंकि घर में रहकर एक दूसरे से बोले बिना भी काम नहीं चल सकता।

तुम्हारा दुःख और सबका दुःख अलग-अलग है, यह हमारा अनुभव है। मौत अलग-अलग है, जगना अलग-अलग है, सोना अलग-अलग है, देह अलग-अलग है, इंद्रियाँ अलग-अलग हैं। किसी का बेटा मर जाए तो वह बहुत दुखी होगा लेकिन यह तो नहीं लगेगा ना कि मैं मर गया। लेकिन यह

अनुभव कि मेरा दुःख मेरा नहीं है, मेरी मौत मेरी नहीं है, मेरा जन्म मेरा नहीं है, यह अनुभव क्या हो सकता है? सबको अपनी देह प्यारी होती है। गधे, घोड़े, कुत्ते और सभी जीवों को अपनी देह प्यारी होती है इसीलिए ठंडी लगे तो वो अपने देह को बचाने के लिए और जगह चले जाते हैं। अपनी देह को कोई तकलीफ नहीं देना चाहता। ठीक है ना अच्छा कुत्ता तो देना चाहता होगा इसलिए मैं पूछ रहा हूं कि जानवर भी अपने देह को तकलीफ नहीं देना चाहता अपने को कोई दुखी नहीं करना चाहता। पत्नी अपने सुख के लिए पति से व्यवहार रखती है। पति भी सुखी रहना चाहता है। सुखी रहने के लिए अच्छी से अच्छी पत्नी छाँटता है। अच्छी का मतलब सिर्फ चमड़ी की सुंदर नहीं। बहुत पढ़ी लिखी या धन-सम्पदा वाली नहीं। असली छटनी तो यह है कि वह मुझे सुखी रखे, कभी दुखी ना करे। आप कैसी चाहते हो? दुखी करने वाली, धनी हो पर चप्पल उठावे, पढ़ी लिखी हो लेकिन बात एको ना माने?

हम कैसा जीवन चाहते हैं? औरों को छोड़ो, अपना देह रोगी ना हो, अपना मन दुखी ना करे। आपका मन आपको दुखी करता है कि नहीं? आप अपने दुखी मन को ठीक करना चाहते हो कि नहीं? बेटा ही दुखी नहीं करता, बाप ही दुखी नहीं करता, पत्नी ही दुखी नहीं करती, पड़ोसी दुखी नहीं करते, नौकर-चाकर ही दुखी नहीं करते। समझने की कोशिश करो। तुम्हारा मन तुम्हें दुखी करता है। तुम अपने मन को कैसे करो कि यह तुम्हें दुखी ना करे। औरों को ठीक करने की कोशिश सब करते हैं। फिर ध्यान दो, पत्नी पति को ठीक करना चाहती है। निन्यानवें प्रतिशत पत्नियाँ कभी अपने को ठीक करवाने नहीं आई कि स्वामीजी हमारा दिमाग ठीक करो। कहती हैं कोई मंत्र पढ़ दो, वो जरा ठीक हो जाएँ। अब देख लो मैं सबके सामने कर रहा हूँ, तुम ही गड़बड़ हो। इनके हिसाब-किताब में, इनकी जाँच-पड़ताल में पति ही गड़बड़ होते हैं। ये बेचारे भी आते हैं कभी-कभी, पर कम आते हैं। शरमाते और घर का मामला कहना नहीं चाहते। तुम तो घर की भी सब कह आती हो। यह इतनी भोली होती है कि घर की बातें भी सब दूर बताती हैं। वो बहुत ऐसे पीते हैं, देर से घर आते हैं, क्या करें हम तो फँस गए हैं। यह सब लिस्ट बताती हैं। पति भी दुखी रहते हैं पर बेचारे मन की मन में अंदर। धधक धुआं नहीं निकले। अंदर तो जल रहे हैं पर धुआं भी नहीं निकलने देते। दुखी हैं पर बता नहीं सकते। बताए तो नाक कटती है। तुम्हें तो परवाह ही नहीं। कट जाए पर उनकी जरूर बतानी है। यह नहीं समझतीं कि उसके साथ मेरी भी नाक जुड़ी है। अब अपने सुखी रहने के लिए पति को ठीक करना चाहती हो, बेटे को ठीक करना चाहती हो। अपने सुखी रहने के लिए सबको ठीक करना चाहते पर अपने सुखी रहने के लिए हमें अपने को ठीक करना है, यह ख्याल नहीं आता। मुझे आज तक कोई ऐसा आदमी नहीं मिला, जो कहे कि मेरे दुख का कारण मैं हूँ। कई साधु महात्मा भी तक भी ऐसे नहीं जो स्वयं के बारे में ऐसा सोचें। दूसरे को लेक्चर देना आसान है। कभी नहीं सोचते कि मेरे दुःख का कारण मेरा मन भी है। निन्यानवें परसेंट तुम्हारे दुःख का कारण तुम्हारा ही मन है। पति नहीं, पत्नी नहीं, बेटा नहीं, बाप नहीं, कोई और नहीं। और एक कर्म का सिद्धांत गोस्वामी जी कहते हैं -

काऊ न को सुख दुःख कर दाता। निज कृत कर्म भोग सब भ्राता।। ऐ भ्राता, ऐ भैया कोई नहीं दुख देता। हमें वन में किसी ने नहीं भेजा। हमारी दुर्दशा ऐसे ही नहीं हुई। हमारी पत्नी का हरण यूँ नहीं हुआ। ये जो कष्ट आए, ऐसे ही नहीं आए। ऐ भ्राता किसी को बदनाम मत करो। किसी पर इल्जाम मत लगाओ। कोई किसी को दुःख नहीं देता। मेरे ही कर्मों का फल है जो मुझे दुख मिलता है।

क्या रामचरित मानस की चौपाईयाँ आपके गले उतरती हैं? पढ़ना, रामायण के हाथ जोड़ लेना, ग्रंथों को आदर करना, ये सब ऊपर ही बातें हैं। आदर तो तब है जब वो चौपाई आपके गले उतर गई हो, अनुभव में आ गई हो। जिस दिन तुम ये कहोगे मेरे दुःख का कारण सास नहीं, मेरी भी कुछ मूर्खता है। बहू नहीं, मेरी भी नासमझी है और मेरी समझ मेरे कर्मों से निर्मित है।

जब संकट का समय आना होता है, प्रारब्ध होता है तो अपनी बुद्धि भी मलिन हो जाती है। पर ये कोई मानने को तैयार नहीं। सारी मलिनता पड़ोसी की है, औरों की है, मैं तो बिलकुल पाक साफ। स्त्रियों को मैंने लड़ते सुना है, देखा है अपनी आंखों से। कहती हैं तू तो ऐसी है, तू तो वैसी है और अंत में फिर एक जब कुछ नहीं कह पाती, सारा माल चुक जाता है तो कह देती है कि हाँ, तू तो दूध की धोई है। पेशाब गंदगी तेरे को तो लगी ही नहीं। तो हम सब एक ही तरह के जन्मे हैं, एक तरह के अनुभव हैं। लगभग जानवर की तरह खट्टा, मीठा, गर्मी, सर्दी, भूख, प्यास लगती है। काम, क्रोध, लोभ, विकार कुत्ते में हैं और हममें भी। हम सब एक तरह पैदा हुए। सिर्फ एक अनुभव मनुष्य ज्यादा कर सकता है। नारद को अहंकार हो गया कि मैं काम विजेता हूँ। भगवान ने कहा अच्छा ठीक है। जैसे कोई कहे कि मेरे पास अंधकार नहीं आता। तेरा बल नहीं है, अंधकार नहीं आता क्योंकि तू प्रकाश के पास बैठा है। तू प्रकाश से हट जा फिर देख। तो जो ब्रह्म के पास बैठे हैं, बस वही मुक्त हैं। बाकी तेरे में कोई खूबी नहीं कि तू मुक्त हो सके।

ब्रह्म की विशेषता है, परमात्मा की महिमा है। जो उसका स्मरण करता है, सुखी हो जाता है। संसार हटाकर हार जाओ, मन को ठीक नहीं कर सकते। एक ही उपाय है कि भगवान का स्मरण करो। भगवान में विकार नहीं है और जिसमें विकार नहीं है उसका नाम है ब्रह्म। उसका नाम है आत्मा। उसका नाम है प्रभु। जिसमें कोई विकार ना है, ना हो सकता है। जिसमें विकार आते रहते हैं, होते रहते हैं, उसी का नाम है मनुष्य। विकार होते हैं उसका नाम पशु भी है पर पशु उपाय नहीं कर सकता। हम एक उपाय कर सकते हैं कि जब विकार आए परमात्मा का स्मरण कर चलें।

भक्ति प्रदर्शन का नहीं दर्शन का विषय है

– दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

जब आप किसी जाग्रत, श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ और अनुभवी संत की शरण में आते हैं, तो यह जन्मों-जन्मों के पुण्यों का उदय, ईश कृपा और आवागमन के चक्र से मुक्ति का एक अवसर है। अवसर बार-बार द्वार पर दस्तक नहीं देते और जो अवसर को पहचान जाते हैं, उसका सदुपयोग कर पाते हैं। अवसर मिला पर तैयारी नहीं है, मन नहीं है तो अवसर व्यर्थ चला जाता है। बहुत बार संसार में बहुत तरह के अवसर बार-बार मिलते हैं लेकिन मनुष्यत्व बार-बार नहीं मिलता। मनुष्य होकर मनुष्यत्व फिर मुमुक्षा और मुक्ति की आकांक्षा। बार-बार जिन पीड़ाओं से, जिन वेदनाओं से, जिन विचलित कर देने वाली बेचैनियों से जीव गुजरता है, बार-बार उन्हीं द्वारों पर जहाँ से दुख, संताप, चिंता उन्हीं द्वारों को बार-बार खटखटाता है। यह कैसी मूढ़ता है? यह कैसा दुश्चक्र है? यह कैसी माया की मोहिनी है? यह कैसी मृग मरीचिका का आकर्षण है? यदि आप एक बार बिजली का तार छू लोगे और करंट लगेगा आपको, तो दोबारा आप सजग हो जाएंगे। उस तार को भी नहीं छूना चाहेंगे, जिस तार में करंट की धार नहीं भी चल रही। यदि एक बार अंगारे ने आपको छाला दिया है तो बार-बार आप आग तो नहीं छूते ना? आप तो बड़े हो गए लेकिन यदि छोटे बच्चे को भी ऐसा कुछ जलने का या कुछ झटका लगने का अनुभव आ जाए वो छोटा बच्चा तक सजग हो जाता है। लेकिन यह कैसी माया की मोहिनी कि हमने जन्मों-जन्मों शरीर धारण किया, जन्मों-जन्मों सुख की आकांक्षा में तरसे, प्यासे भटके, पुनः पुनः सुख की आकांक्षा, पुनः पुनः दुःख का अंबार। फिर दुःख से बचने का प्रयत्न और फिर किसी सुख की आकांक्षा। कितना विचित्र है! बिलकुल वैसा ही जैसे एक व्यक्ति के पीछे लगा हुआ एक भयंकर शेर और वह व्यक्ति हुए उससे बचने के प्रयत्न में एक बिना मुंडेर के कुएँ के अंदर जा गिरा। सौभाग्य से गिरते समय कुएँ के भीतर उसकी दीवार में उगे हुए एक वृक्ष की डाल उसके हाथ में आ गई। वो उस पर लटक गया। नीचे दृष्टि गई तो देखा कि उस सूखे कुएँ के अंदर एक भारी अजगर बैठा है, अपना मुख फैलाए। भूखा प्यासा कि कुछ भोजन मुख में आए। फिर दृष्टि चली गई पेड़ की उस डाल पर, जिसका आश्रय लेकर वह हवा में लटका हुआ था। देखता क्या है कि सफेद और काले रंग के दो चूहे उसकी जड़ को कुतर रहे हैं। ऊपर शेर खड़ा है, नीचे अजगर बैठा है और जिस डाल का आश्रय पकड़कर उस अंधकूप में वह लटक रहा है, उसकी जड़ों को चूहे कुतर रहे हैं। कितनी बड़ी विषमता है! कितना भारी संकट है! चारों तरफ मृत्यु ही मृत्यु!

इतने में ऊपर से एक बूंद टपकी। ऊपर दृष्टि गई तो दिखाई दिया कि वहीं पर मधुमक्खी का एक छत्ता लटका है और उसमें से एक-एक बूंद शहद की टपक रही है। जैसे ही गिरती हुए शहद की बूंदों की तरफ दृष्टि गई, उस व्यक्ति ने उसकी ओर अपना मुँह खोल लिया। शहद की कुछ बूंदें उसके मुख में आएँ, इसकी प्रतीक्षा करने लगा। मुँह में गिरती बूँदों का स्वाद ले रहा है। ऊपर बैठा शेर उसे खाने को तैयार है, नीचे बैठा अजगर उसे निगलना चाहता है और जिस डाल पर वह लटका है, उसे चूहे कुतर रहे हैं। अब शहद की लालसा में उस व्यक्ति को चारों तरफ मृत्यु नजर नहीं आ रही। छत्ते से टपकती हुई बूंदें जो उसके मुख में आकर गिरेंगी, उन्हें लालसा की दृष्टि से

देख रहा है। बिलकुल ऐसी ही दशा है हमारी भी। सुख की एक आकांक्षा चारों तरफ से। हमारा अस्तित्व संकटों में घिरा है, वह दिखाई नहीं देता। जीवन की डाल पकड़कर जिजीविषा से भरे हम, किसी सुख रूपी बूंद की प्रतीक्षा कर रहे हैं। आपने देखा कि जब आप जन्मदिन मनाते हैं, बड़ी प्रसन्नता, बड़ी खुशियाँ लेकिन कितना बीत गया, कितना हाथ से चला गया? अनमोल खजाना लुट रहा है श्वाँसों का। जिन श्वाँसों का नियमन करके समय के पार जाना था, कालों के काल महाकाल से साक्षात्कार करना था, वो श्वाँसें व्यर्थ बह रही हैं। निद्रा में, भोजन में, खोया पाया के हिसाब किताब में, व्यर्थ की चर्चा में जीवन बीता जा रहा है। व्यर्थ की बातें, जहाँ नहीं बोलना चाहिए, वहाँ भी बोलना है। न वाणी का संयम, न मन का संयम, न चेष्टाओं का संयम, न इंद्रियों का संयम, बिलकुल वैसे ही जैसे कोई कंकड़-पत्थर बटोरे, कोहिनूर का हीरा देकर। बिलकुल वैसी ही यह मूढ़ता है। इस मूढ़ता पर चोट मारती है सद्गुरु की वाणी कि अब तो चेत अचेत हठीले। हठीला हो गया है तू। हठीलापन क्या है? हठीलापन यानि निर्मित की गई आदतें। आदतें हमें हठीला बनाती हैं। सारे दिन की चर्या, जिसमें आपकी व्यर्थ चर्चा भी थी, जिसमें आपके अनर्गल और बिना तारतम्य के विचार भी थे और जिसमें आपकी विचित्र निरंकुश भावुकता भी थी, उन सबका जब आप आकलन करेंगे, तब आप सही मायनों में देख पाएंगे कि आपने अपने समय का सदुपयोग किया या दुरुपयोग किया।

वह एक दिन जो बीता है, उसने आपको क्या दिया? आपको और ढीला किया, आपको और अस्वस्थ किया, आपको और विषाद में डाला या उसने आपको उमंग से भरा, आपकी भ्रांतियाँ टूट गईं, आपके भ्रम टूट गए या आपके संशयों की निवृत्ति हुई? आपके भीतर कुछ है जो खिला, धीरे-धीरे आपके अंतर्आनन्द की पंखुड़ी खुली या फिर वह भी मुरझा गई, झुलस गई? हमारी वासनाओं या निरंकुश विचारों की आंधियों के कारण। इसका आकलन जब हम करेंगे तो फिर हमें समझ आएगा कि हम किस तरह कैसे-कैसे रूप में अपने समय का सदुपयोग या दुरुपयोग कर रहे हैं। इसका आकलन बैठकर करना होगा। इसको कहते हैं आत्म निरीक्षण। आपको जो प्राप्त है, उसमें से आपने कितना खर्चा किया।

जब आपके पास मोबाइल का डाटा खत्म होता है तो आपको कितनी फिक्र होती है। महीना खत्म नहीं हुआ, डाटा खत्म हो गया। कितनी फिक्र होती है! फिर उसमें पैसे जमा करते हो। कभी विचार करना कि भगवान ने हमारे भीतर जो 'डाटा' भरकर भेजा था, वह कितना समाप्त हो गया। उसकी कभी फिक्र हुई? उसकी कभी चिंता हुई? उसके लिए लगा कि अब तक हमने किस तरह अपने जीवन को ऐसे व्यर्थ गवाँ दिया है? अब आप कहोगे कि दीदी माँ, आत्म निरीक्षण का क्या पैमाना होगा?

तो विचार करना कि सेवा रूपी किसी यज्ञ में आहुतियाँ डालते समय तुम निखरे हो कि बिखरे हो। बहुत बार हमें लगता है कि मैंने किया, सब कुछ मेरे से ही हो रहा है। एक व्यक्ति बार-बार तीर्थों में गया। चारों धाम की यात्रा कर ली। बावन शक्तिपीठों के दर्शन कर आया। द्वादश ज्योतिर्लिंगों पर मत्था टेक आया। गंगा मैया, यमुना मैया सबका पूजा-वंदन कर लिया। लोग कहते कि बड़ा धर्मात्मा है जी। इनके जैसा तो धर्मात्मा कोई देखा ही नहीं। ये तो बड़े धर्मज्ञ हैं। ये तो बड़े धार्मिक हैं। इनको तो तीर्थों से बहुत प्रेम है। ये बहुत पूजन योजन करते हैं। और यह सब सुनकर वो फूलता रहा। मृत्यु के प्रसंग में बहुत भरोसा था उसको, अपने तमाम तरह के धार्मिक कृत्यों के बल पर कि स्वर्ग तो निश्चित मिलेगा ही।

एक दिन उसे एक सपना आया। सपने में ये बड़ी विचित्र दशा में एक तिराहे पर खड़े हैं। एक रास्ता जा रहा है स्वर्ग की ओर, एक रास्ता जा रहा है नरक की ओर तथा एक रास्ता जा रहा है मोक्ष की ओर। वहीं पर देवदूत खड़े हैं। इन्होंने सोचा कि देवदूत ने मुझे देख लिया तो मेरा स्वागत करेंगे, मुझे पुष्प मालाएँ पहनाएंगे और मेरे लिए स्वर्ग के द्वार खोल देंगे। देवदूत ने उनको देखकर कहा कि जाईये, यह वाला रास्ता है आपका। उनका संकेत नर्क की ओर था। अब यह सुनते ही वो व्यक्ति अचरज के साथ बोल उठा कि 'अरे, यह क्या विचित्र बात है! मैंने जीवन भर जो भी किया, उसके लिए तो मेरा स्वर्ग पक्का होना चाहिए।' देवदूत बोले कि 'आप जो करते रहे ना, उसकी वाहवाही लूटते रहे। धरती पर आपने बहुत प्रशंसा पा ली है। आपका हिसाब-किताब सब बराबर हो गया है। ऊपर से जितने भी आपने सेवा कृत्य किए या धार्मिक कृत्य किए, उनके प्रति आपका अहंकार बहुत प्रबल है। तो ऐसे अहंकार के साथ स्वर्ग नहीं जाया जा सकता। ऐसे अहंकार के साथ तो नरक का ताप ही झेलना पड़ेगा।'

यह सुनते ही एक झटके से इस व्यक्ति की नींद खुल गई। वह सपना था लेकिन उस सपने ने कहीं भीतर से उसे सजग कर दिया। अब चेष्टाएँ हैं परमात्मा को पुकारने की, लेकिन प्रकट नहीं हैं। अब प्रार्थना करता है लेकिन कहीं छुपकर करता है। अब ध्यान करता है तो किसी को कानों कान खबर नहीं होती। अब सेवा में उतर जाता है, रोती आँखों के अश्रु साफ करता है, भूखों को भोजन खिलाता है, लेकिन इसका कहीं प्रदर्शन नहीं करता। एक स्वप्न ने उसे ऐसा दर्शन दे दिया कि अब वो जो बहिर्मुख होकर सबको दिखाने में 'अभिमान रस' ले रहा था, अब वही अंतर्मुखी होकर सच्चे सुख की ओर अग्रसर होने लगा। एक स्वप्न ने जागृति दे दी।

ऐसे ही कोई सद्गुरु की वाणी जब हमें सजग करती है, तो हमें पता चलता है कि हम कहीं हिसाब-किताब बराबर तो नहीं कर रहे। अपनी प्रार्थनाएँ, अपनी वंदनाएँ हमें विनीत बनाती हैं। ये सब हमारे चित्त में निर्वाणता लाने के लिए है यानि हमें मान मुक्त करने के लिए, यानि हमें अभिमान से मुक्त करने के लिए है। भक्ति प्रदर्शन का नहीं दर्शन का विषय है। किसी को दिखाने के लिए अपनी पूजा-प्रार्थनाएँ या सेवा के कार्य नहीं होने चाहिए। इतनी लंबी आयु के बाद, इतनी लंबी जीवन यात्रा के बाद, जिसमें समाज है, राष्ट्र है, परिवार का कर्तव्य है अपनी व्यक्तिगत कुछ भी इच्छाएँ हैं तो हमें स्वयं का निरीक्षण करना चाहिए।

आधुनिक महाभारत का युद्ध अवश्यंभावी

(भाग 1)

- भानुप्रताप शुक्ल

(यह लेख नवम्बर, 1990 में लिखा गया है)

पहले ऐसा लगता था किन्तु अब यह स्पष्ट है कि हिन्दुओं पर चोट करना ही 'सेकुलरिटी' का सबसे बड़ा प्रमाण है। परिणामस्वरूप हिन्दू समाज के अधिकांश लोग अब यह सोचने लगे हैं कि यह देश केवल अल्पसंख्यकों अर्थात् मुसलमानों का है। मुसलमान यहाँ के अधिकांश राजनीतिक दलों के एक ऐसे इकलौते दामाद की तरह हैं कि वे बेटी को तलाक न दे दें, इस भय से उनकी खुशामद करना राजनेताओं का सर्वप्रथम राजनीतिक धर्म बन चुका है। मुसलमान नेताओं द्वारा किया जाने वाला प्रत्येक कार्य और उनकी प्रत्येक माँग की पूर्ति सेकुलरिटी की प्रथम शर्त बन चुकी है। भारत के मजहबी और राजनीतिक सेकुलरवाद को हिन्दुओं का पक्ष लेने से ही धक्का लगता है। आजादी के बाद के इन तैंतालीस वर्षों में इस देश का पच्चासी प्रतिशत हिन्दू समाज किसी मजहबी राज्य के गैरधर्मी द्वितीय श्रेणी नागरिक जैसा बन गया है।

देश के बुद्धिजीवी या तो कायर हैं या उन्हें हिन्दू समाज की सांस्कृतिक प्रवृत्ति की पहचान नहीं है। कारण, वे जाति और मजहब को तो उचित ठहराते हैं किन्तु समाज और धर्म को साम्प्रदायिक मानते हैं। यदि किसी खत्री महासभा, ब्राह्मण महासभा, यादव, जाट, हरिजन संघ, क्षत्रिय महासभा, अग्रसेन समाज और इसी प्रकार के शैव, शाक्त, मध्व, लिंगायत, जैन, बौद्ध और सिखों के अलग-अलग सम्मेलन आयोजित किए जाएँ तो उन्हें वे अपना आशीर्वाद प्रदान करते हैं, उन आयोजनों में शामिल होकर अपनी उदारता और विशाल हृदयता का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं किन्तु सभी जातियों और सम्प्रदायों का, जातीय और साम्प्रदायिक भावना से मुक्त, कोई सामाजिक और सामूहिक आयोजन उनके लिए एक साम्प्रदायिक आयोजन होता है। इन सामूहिक आयोजनों के कारण उन्हें समाज टूटता दिखाई पड़ता है। देश के साम्प्रदायिक सद्भाव को आघात लगता है। देश की एकता के लिए संकट पैदा हो जाता है और जातिवाद तथा सम्प्रदायवाद में देश का हित देखा जाता है। सामाजिक अभिकरण और साम्प्रदायिक समरसता में उन्हें खतरा दिखाई देता है। हिन्दू समाज की एकता, उसका संगठित सामाजिक स्वरूप, अपने देश के लिए उसके सामूहिक मन की तड़प और राष्ट्र प्रेम की अभिव्यक्ति सेकुलरिस्टों को रास नहीं आती। हिन्दू समाज की प्रत्येक माँग को, उसकी आस्थाओं और विश्वास को, उसकी परंपरा और रीति-रिवाज को हिन्दू बनाम मुस्लिम के रूप में देखा जाता है।

हिन्दू देश की अखण्डता की बात करें तो उसे मुसलमानों के विरुद्ध माना जाता है। हिन्दू इतिहास की बात करें तो उसे मुसलमानों का शत्रु माना जाता है। हिन्दू भारत के राष्ट्रीय महापुरुषों की बात करें तो उसे मुसलमानों पर आक्रमण माना जाता है। हिन्दू अपने तीज-त्यौहारों का आयोजन करें तो

उसे मुसलमानों को चुनौती देने वाला माना जाता है और यदि हिन्दू समान नागरिकता, समान नागरिक कानून और समान राष्ट्रीय उद्देश्य पर बल देता है तो उसे मुसलमानों की पहचान नष्ट करके उन्हें भयभीत करना माना जाता है।

तो फिर क्या करें हिन्दू कि मुसलमान प्रसन्न रहें? अब तक का अनुभव यह है कि वह देश की भूमि माँगे तो उसे भूमि दे दो। वह अपने लिए अलग नागरिक संहिता और कानून की माँग करे तो उसे स्वीकार कर लो। उसकी इच्छा या सहमति न हो तो हिन्दू समाज शोभा यात्रा न निकाले, अपना मन्दिर न बनाए, मंदिर में पूजा की घंटी न बजाए। मुसलमान दूसरे देशों से घुसपैठिया बनकर आए तो मताधिकार प्रदान कर दो। वह पाकिस्तान की सहायता से देश के लाखों हिन्दुओं को अपने ही देश में शरणार्थी बना दे तो चुप रहो। वह संकट के समय पाकिस्तान का साथ देने की धमकी दे तो उसके सामने गिड़गिड़ाओ तो ही वह भयमुक्त होकर रह सकेगा। तभी राष्ट्रीय और सेकुलर होना माना जाएगा। हिन्दू राष्ट्रीय हित और गरिमा की बात करता है तो उसे हिन्दू साम्राज्यवाद का मुसलमानों पर आक्रमण माना जाता है।

हिन्दुओं के उत्कट राष्ट्रप्रेम और उनकी धार्मिकता को साम्प्रदायिक और मुस्लिम विरोधी घोषित करके उसकी निंदा करना और अल्पसंख्यकों अर्थात् मुसलमानों की मजहबी माँगों के समक्ष राष्ट्रीय हितों के समर्पण को प्रगतिशील बताना भारत के बुद्धिजीवियों, विशेषकर हिन्दू बुद्धिजीवियों की बौद्धिक प्रथा बन गई है। यह धारणा उत्पन्न करने का सतत् प्रयास किया जाता है कि हिन्दुओं की धार्मिकता और उनके सामाजिक आचरण के सार्वजनिक प्रदर्शन से अल्पसंख्यकों (मुसलमानों) की भावनाएँ आहत होती हैं, वह भयभीत होते हैं। उनमें असुरक्षा का भाव पैदा होता है। यद्यपि यह धारणा हिन्दू मानस के विपरीत है, यद्यपि हिन्दुओं ने किसी मजहबी समुदाय के रूप में अपनी राजनीतिक शक्ति का दूसरे समुदाय पर हिंसा करने के लिए न कभी उपयोग किया और न उसे उचित ही माना, फिर भी उस पर मजहबी अंधता का आरोप लगाया जाता है। यदि लगातार इस तिरस्कार और आरोप का संताप भोगते-भोगते हिन्दुओं में चिढ़ उत्पन्न हो जाए और प्रतिक्रियावश वे अपने स्वभाव और चरित्र के विपरीत आचरण करने लग जाएँ तो इसका दोषी कौन होगा? यदि देश को साम्प्रदायिकता की आग में जलने, रक्तपात और पुनः विभाजन से बचाना है तो अल्पसंख्यकों अर्थात् मुसलमानों की मजहबी माँगों की, साम्प्रदायिकता बना देने की सीमा तक पूर्ति और उन्हें हिन्दू उग्रवाद का भय दिखाकर स्वयं को उनका रक्षक घोषित करने की बुद्धिजीवी, राजनीतिक, शासकीय प्रथा और पाखण्ड समाप्त करना होगा। हिन्दू समाज राजनीति और राज्य सापेक्ष नहीं है। उसकी रचना प्रक्रिया, अवधारणा और आस्था राज्य राजनीति निरपेक्ष है। वह सभी को आत्मसात करने और सभी को एकात्म बनाने में विश्वास तो करती है किन्तु किसी का धर्म परिवर्तन करने में विश्वास नहीं करती। हिन्दू धर्मान्धता या मतान्धता की बातें निराधार और बकवास हैं। जिस समाज और धर्म में कट्टरता और कठमुल्लेपन का बीज है ही नहीं, उसकी जमीन से साम्प्रदायिकता का कँटीला वृक्ष कैसे उग सकता है? फिर भी हिन्दू की राष्ट्रीय चेतना के जागरण को साम्प्रदायिक विद्वेष का जागरण बताया जाता है।

अल्पसंख्यकवादियों यानी सेकुलरिस्टों का तर्क है कि हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए मंदिर-मस्जिद एक साथ बनने चाहिए। तर्क अच्छा है, कल्पना मनोरम है, किन्तु एक ही भूखण्ड पर साझी दीवार का मन्दिर-मस्जिद क्या बलात् किसी मन्दिर को तोड़कर बनाया जाना ही मुस्लिमों की सद्भावना अर्जित करने की शर्त है? क्या सशर्त सद्भावना सम्भव है? अल्पसंख्यकों (मुसलमानों) की सद्भावना क्या देश की पच्चासी प्रतिशत आबादी को पराजय और अपमान के कटघरे में खड़ा करके ही अर्जित की जा सकती है? सामाजिक और साम्प्रदायिक सद्भाव का जन्म तुष्टीकरण में से नहीं, सामाजिक अभिसरण में से होता है। सामाजिक मन में मैल और विद्वेष के रहते अपवादस्वरूप ईद और इफ्तार, होली, दिवाली और दशहरा में तो लोग सहेतु शामिल हो सकते हैं किन्तु निर्हेतुक बंधुभाव की सहजता से शामिल होना सम्भव नहीं होता। जब तक सामूहिक सहजता उत्पन्न नहीं होगी, मुसलमान हिन्दुओं के साथ सदा टकराते रहेंगे और इस टकराव को मुसलमानों के स्वयंभू प्रतिनिधि, हिन्दू राजनेता, शासक और बुद्धिजीवी बल प्रदान करते रहेंगे। हिन्दू बहुमत को मुस्लिम अल्पमत का गुलाम बनाकर रखने का रास्ता साम्प्रदायिक सद्भाव, सामाजिक अभिसरण और राष्ट्रीय एकता की मंजिल की ओर नहीं, शत्रुता और विघटन की ओर ले जाता है। यही हमारा अनुभव है, यही इतिहास भी बताता है।

(शेष भाग अगले अंक में...)

हिन्दुओं के उत्कट राष्ट्रप्रेम और उनकी धार्मिकता को साम्प्रदायिक और मुस्लिम विरोधी घोषित करके उसकी निंदा करना और अल्पसंख्यकों अर्थात् मुसलमानों की मजहबी माँगों के समक्ष राष्ट्रीय हितों के समर्पण को प्रगतिशील बताना भारत के बुद्धिजीवियों, विशेषकर हिन्दू बुद्धिजीवियों की बौद्धिक प्रथा बन गई है। यह धारणा उत्पन्न करने का सतत् प्रयास किया जाता है कि हिन्दुओं की धार्मिकता और उनके सामाजिक आचरण के सार्वजनिक प्रदर्शन से अल्पसंख्यकों (मुसलमानों) की भावनाएँ आहत होती हैं, वह भयभीत होते हैं। उनमें असुरक्षा का भाव पैदा होता है।

भक्ति-योग-वेदान्त साधना शिविर

वृन्दावन.

'वात्सल्य गंगा अभियान' पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी का एक ऐसा सपना है जो इस देश की बेटियों के द्वारा धर्मजागरण के साथ साकार रूप लेगा। पिछले तीन दशकों में देश-दुनिया ने भौतिक विकास की नई उड़ान भरी है। तेजी से बदलते इस युग में हमारे वो सनातनी जीवन मूल्य कहीं खोते जा रहे हैं, जिनके बल पर भारत कभी विश्वगुरु रहा है। वर्तमान युवा पीढ़ी के बीच इन्हीं मूल्यों की पुनर्स्थापना का संकल्प है - वात्सल्य गंगा अभियान।

धर्मजागरण में दीदी माँ की तेजस्वी भूमिका से प्रभावित होकर देश की कुछ बेटियों के मन में संकल्प जागा कि हमें भी उनके साथ सनातनी मूल्यों को युवा पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए अपना भी कुछ योगदान देना चाहिए। उन बेटियों ने इच्छा प्रकट की कि दीदी माँ जी हम भी आपकी तरह अपना सम्पूर्ण जीवन सनातन धर्म और राष्ट्र की सेवा में समर्पित करना चाहती हैं। इनमें से कई बेटियों ने संन्यास भी लिया। दीदी माँ जी ने बेटियों की इस इच्छा को नाम दिया - वात्सल्य गंगा अभियान। निश्चित किया गया कि ये बेटियाँ उनका तथा अनेक विद्वजनों का मार्गदर्शन प्राप्त करके दूरदराज समाज के उस वर्ग तक पहुँचेंगी, जो या तो मुख्यधारा से अलग है या फिर उसे सनातन धर्म के मर्म की समझ नहीं है। कथा-प्रवचनों के माध्यम से वात्सल्य गंगा अभियान की ये बेटियाँ हमारी युवा पीढ़ी को अपने प्राचीन सनातनी जीवन मूल्यों की शिक्षा देकर उनकी समग्र उन्नति का पथ प्रशस्त करने में भी सहायता करेंगी।

ऐसी ही बेटियों और परमशक्ति पीठ के पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं का एक प्रशिक्षण शिविर 'भक्ति-योग-वेदान्त ध्यान साधना शिविर' के रूप में विगत 5 से 7 जनवरी तक वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में आयोजित किया गया। इसमें वात्सल्य ग्राम की वो 'यशोदा माताएँ' भी सम्मिलित हुईं, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन वात्सल्य ग्राम की सन्तानों के संस्कारपूर्ण पालन-पोषण के लिए पूज्या दीदी माँ के श्रीचरणों में समर्पित कर दिया। शिविर का उद्देश्य था दीदी माँ जी एवं विभिन्न सामाजिक संगठनों के विचारकों से पाथेय प्राप्त करना।

शिविर का शुभारंभ 4 जनवरी की संध्या को पूज्या दीदी माँ जी के कर-कमलों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। इस अवसर पर वर्गाधिकारी पूज्या साध्वी साक्षी चेतना जी, स्वामी श्री सूर्यानन्द जी महाराज, स्वामी श्री प्रकाशानन्द जी महाराज एवं श्री संजय भैयाजी प्रमुख रूप से सम्मिलित हुए।

तीन दिनों के इस शिविर में श्री अजय पारीक (अखिल भारतीय सेवा प्रमुख-विश्व हिन्दू परिषद), श्री बजरंग बागड़ा (अंतर्राष्ट्रीय महामंत्री-विश्व हिन्दू परिषद) एवं श्री अरुण नेटके (केन्द्रीय मंत्री-विश्व हिन्दू परिषद एवं मंदिर अर्चक पुरोहित आयाम प्रमुख) ने क्रमशः 5, 6 एवं 7 जनवरी को अपने प्रभावी उद्‌बोधन प्रदान किये, जिन्होंने शिविरार्थियों को गहराई तक प्रभावित किया।

प्रतिदिन प्रातः 4 बजे जागरण के साथ शिविर की गतिविधियाँ आरंभ होती थीं। प्रातः 5 से 6 बजे तक पूज्या दीदी माँ जी शिविरार्थियों को ध्यान साधना के प्रयोग करवाती थीं। इसके पश्चात स्नानादि से निपटने के बाद दूसरे सत्र में 7 से 8:30 बजे तक सर्वमंगला माता की आरती एवं दीदी माँ जी प्रवचन होते थे। जलपान इत्यादि के बाद 9:45 से 11 बजे तक पुनः दीदी माँ जी का मार्गदर्शन एवं पन्द्रह मिनटों के विराम के पश्चात् 11:15 से 12:15 बजे तक शिविर की समीक्षा होती थी। दोपहर 12:15 से 2:45 बजे तक का समय भोजन एवं विश्राम का रहता था। दोपहर 3 से 4 बजे तक आगंतुक विद्वजन का मार्गदर्शन प्राप्त होता था। सायं 5 से 6 बजे तक पूज्या दीदी माँ का प्रभावी उद्‌बोधन, 6 से 7:30 तक माँ सर्वमंगला की आरती एवं ललिता सहस्रनाम स्त्रोत पाठ तथा रात्रि 8 से 8:45 बजे तक रात्रि भोजन का समय होता था। रात्रि 9 से 10 बजे तक आनन्द मेला का आयोजन होता था, जिसमें शिविरार्थी अपनी-अपनी प्रतिभाओं जैसे गीत, संगीत या अभिनय इत्यादि का प्रदर्शन करते थे। स्वामी श्री सूर्यानन्द जी महाराज ने शिविर संबंधी आदर्श संन्यास संहिता का वाचन प्रभावी रूप में किया। श्रीमती सोमा नायर (ऑस्ट्रेलिया) ने भी अपने प्रभावी विचार रखे।

इस शिविर की कुछ विशेषताएँ दर्शनीय रहीं। जैसे, तीन दिनों तक मोबाईल फोन का प्रयोग सम्पूर्ण रूप से वर्जित रहा, किसी भी शिविरार्थी को मीरा-माधव रिसार्ट के बाहर भ्रमण की अनुमति नहीं थी। सबसे बड़ी बात कि किसी भी शिविरार्थी ने किसी भी गतिविधि की पूर्व निर्धारित समय सारणी का उल्लंघन नहीं किया। कुल मिलाकर यह शिविर बहुत प्रभावी रहा। समापन के अवसर पर सभी शिविरार्थियों का मत था कि भविष्य में यह शिविर सात दिवसीय किया जाना चाहिए ताकि उन्हें इसका बौद्धिक लाभ प्राप्त हो सके।

इस शिविर में साध्वी साक्षी चेतना जी (वर्गाधिकारी), स्वामी सत्यशील जी (सर्व व्यवस्था प्रमुख), डॉ.उमाशंकर 'राही' (मंच संचालन प्रमुख), साध्वी सत्य सुप्रिया जी (दैनिक दिनचर्या प्रमुख), साध्वी सत्यश्रद्धा जी एवं साध्वी सत्यध्वनि जी (भोजन, आवास एवं मंच सज्जा प्रमुख), साध्वी सर्वसिद्धा जी (बैठक स्थान व्यवस्था प्रमुख), साध्वी सत्यव्रता गिरी (सत्संग आरती प्रमुख), साध्वी शिरोमणी जी (वर्ग पर्यवेक्षक), स्वामी सत्यश्रेय जी एवं स्वामी सत्यालोकानंद जी गिरी (परिवेशन प्रमुख), साध्वी सत्यसमिधा जी (वर्ग गीत प्रमुख), साध्वी सत्यनिष्ठा जी एवं साध्वी सत्यध्वनि जी (आनन्द मेला प्रमुख) तथा श्री रंगनाथ सोनी ने (फोटो/वीडियोग्राफर) के रूप में अपनी उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान कीं। 7 जनवरी को एक अत्यन्त ही भावपूर्ण समारोह में शिविर का समापन हुआ। अनेक शिविरार्थियों ने बताया कि उन्हें इसमें बहुत कुछ सीखने को मिला।

आनंदमय कोष के बिना मन की कली खिलेगी नहीं

- दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

जब एक बूंद अकेली होती है तो उसके साथ काफी सारे भय होते हैं। सूख जाने का, बिखर जाने का या खो जाने का परन्तु जब वही बूंद किसी सिंधु से मिल जाती है तो फिर उस सिंधु की विराटता, अजरता और अमरता उस बिंदु को प्राप्त हो जाती है। हम भी इस चैतन्य सागर के एक नन्हे से बिंदु हैं। बेचैनी तो होगी ही, जब तक बिंदु का सिंधु हो जाना घटित नहीं होगा। क्योंकि हमारा अस्तित्व मात्र शरीर के तल पर ही नहीं है। यदि केवल शरीर के तल पर ही हमारा अस्तित्व होता, तो हमें कोई बेचैनी नहीं होती। आप देखिये कि पशु-पक्षियों के जगत में कोई व्याकुलता नहीं है। वहाँ कोई बेचैनी नहीं है। वहाँ दुःख नहीं है। वहाँ कष्ट अवश्य हैं। कष्ट शरीर के तल पर होता है। गर्मी का, सर्दी का, आंधी का, बर्फीली हवाओं का या झुलसाती हुई लू का। उनको कष्ट तो होता है लेकिन दुःख नहीं होता, क्योंकि वो शरीर के तल पर हैं। हमारे पास शरीर के साथ मन भी है। मन को परिवर्तन चाहिए। अगर इस परिसर के द्वार पर ताला लगाकर आपको कह दिया जाए कि अब आप बाहर नहीं जा सकते, तो आपकी व्याकुलता देखने लायक होगी। यह आदेश आपके मन को बेचैन कर देगा लेकिन आप अपनी मर्जी से अपने कमरे के भीतर से चिटकनी लगाकर चौबीस घंटे उसमें बंद रह सकते हैं। क्यों? क्योंकि आपके मन को पता है कि यह आपकी स्वेच्छा से हो रहा है, आपकी राजी से हो रहा है। इसीलिए आप स्वयं स्वतः कैदी हो सकते हो लेकिन किसी दूसरे के द्वारा आपको प्रतिबंधित कर दिया जाए तो आपके मन में बेचैनी होना प्रारंभ हो जाएगी।

मन को क्या चाहिए? परिवर्तन। लेकिन मन को परिवर्तन क्यों चाहिए? आप अपने घर के फर्नीचर को बार-बार बदलते हो। क्यों? एक कपड़ा आपने पहना, कुछ समय बाद उसके प्रति आपके चित्त में उब पैदा होती है। क्यों? आपके मित्र बदलते रहते हैं। क्यों? क्योंकि आपके मन को सुख की आकांक्षा है। और यह भ्रम है बुद्धि को कि अगर स्थान का, व्यक्तियों का, वस्तुओं का परिवर्तन करेंगे तो हमें सुख मिल जाएगा। इस चक्कर में हम बहुत सारे परिवर्तनों के आकांक्षी हो जाते हैं। मन क्या चाहता है? हमारा मन सुखाकांक्षी है। वो सुख चाहता है लेकिन क्षणिक सुख आपको केवल उत्तेजना ही देता है। उदाहरण के लिए आप अपने प्रियजनों के साथ पाँच-सात घण्टों तक मिलते-जुलते, हँसते गाते हैं परन्तु उसके बाद आपको लगने लगता है कि हे भगवान, अब ये अपने-अपने घर चले जाएँ। उस उत्तेजना को आप ज्यादा देर तक नहीं जी सकते। किसी भी तरह की उत्तेजना, वह चाहे सुख की हो चाहे दुःख की, बहुत देर तक टिक नहीं पाती। आपने देखा या सुना होगा कि विदेशों के लोग कई बार बड़ी जल्दी अपने जीवनसाथी बदलते हैं। वो तलाक देंगे, दोबारा ब्याह करेंगे और उस ब्याह में पहले वाले भी गुलदस्ते लेकर उन्हें बधाई देने पहुँच जाते हैं। वहाँ लोग बड़ा आश्चर्य करते हैं कि भारत के लोग यह कैसे हैं जो एक ही व्यक्ति के साथ पूरी जिंदगी जी लेते हैं। एक बार स्वामी राम विदेश गए तो वहाँ कब्रिस्तान में एक कब्र पर एक स्त्री को पंखा झलते देखा। वो बड़े प्रभावित होकर उसे कहने लगे कि -'देवी! तेरे पैर छू लेने का मन करता है। हमारे यहाँ तो जीवित पतियों की सेवा करती है स्त्रियाँ और तू तो जो मर गया, उसकी कब्र पर भी पंखा झल रही है!' वो स्त्री बोली कि -'चक्कर में ना पड़ो महात्मा! मौसम जरा खराब है इसीलिए पंखा करके कब्र को सुखा रही हूँ क्योंकि जब तक पहले की कब्र सूख नहीं जाती, तब तक मैं दूसरा ब्याह नहीं कर सकती।'

हम भारत के लोग एक के साथ संतुष्ट कैसे रहते हैं? क्योंकि हमारे ऋषियों का प्रसाद हमारे पास है कि सुख परिवर्तन करके नहीं मिलेगा। जो अनुभूति किसी एक के साथ किसी एक स्थान पर आपको है उसका सच यही है कि उसका आकर्षण एक दिन विकर्षण में बदल जाता है। इसको आप सौ बार भी करके देख लो, तो अनुभव यही आने वाला है प्रत्येक आकर्षण एक दिन विकर्षण में बदल जाता है।

अमेरिका जैसा देश जिसके पास बहुत कुछ है, उनकी व्याकुलता कुछ अलग प्रकार की है और गरीब देशों के लोगों की आशा रोटी, कपड़ा और मकान के साथ छोटी-छोटी वस्तुओं से ही लगी हुई है। इसका अर्थ है कि जिनके पेट की भूख मिट गई, उनकी आत्मा की भूख जग जाती है। क्योंकि हम मात्र शरीर नहीं हैं। अब हम मन के तल पर आएँ, जिसमें सुख, प्रेम और सम्मान की आकांक्षा रहती है। अब हम बुद्धि के तल पर आएँ। बुद्धिमान लोगों को यदि बौद्धिक खुराक नहीं मिले तो उनको तृप्ति नहीं मिलती। जब तक हम अपने गुरुदेव का प्रवचन ना सुन लें, किसी बड़े महापुरुष, दार्शनिक व्यक्ति की किताब के दो-चार पन्ने ना पढ़ लें, हमारी बुद्धि को तृप्ति नहीं मिलती। बुद्धि को बौद्धिक खुराक चाहिए। यह उसकी खुराक है। शरीर की अपनी खुराक है, मन की अपनी खुराक है और बुद्धि की अपनी खुराक है। प्राणों की भी खुराक देनी पड़ती है, जिसको हम प्राणायाम इत्यादि करके पूर्ण करने का प्रयत्न करते हैं लेकिन आप अन्नमय कोष को, मनोमय कोष को और विज्ञानमय कोष को चाहे जितना तृप्त कर लो लेकिन जब तक आनंदमय कोष तृप्त नहीं होगा, आपके मन की कली खिलेगी नहीं।

सेवा कार्य क्यों और कैसे

- अजय पारीक
(अखिल भारतीय सेवा प्रमुख-विश्व हिन्दू परिषद)

आज इस शिविर का प्रथम दिन है और मुझे जो विषय दिया गया है, वह सेवा का विषय है। परम पूज्य दीदी मां के सानिध्य में ही हम सब चिंतन मनन और यह वार्तालाप करने वाले हैं। हमारे श्रेष्ठ संत-महापुरुषों ने सेवा विषय की बहुत दार्शनिक और शास्त्रीय व्याख्या की है। लेकिन हम समाज में घूमने-फिरने वाले कार्यकर्ता सेवा को बहुत एक सरल वाक्य में समझने का प्रयास करते हैं कि अभावों की पूर्ति यानी सेवा है। शिक्षा का अभाव है तो उसकी व्यवस्था कर दो। चिकित्सा सुविधाओं का अभाव है तो उसकी उपलब्धता कर दो। सामाजिक दृष्टि से कोई अभाव है तो उसकी पुर्तता कर दो और इन दिनों की जो बहुत बड़ी चुनौती हमारे सामने है रोजगार की। अगर उसका अभाव है तो उसकी व्यवस्था कर दो। साधारणतः इन चार शीर्षकों में समाज जीवन का, व्यक्ति जीवन का और पारिवारिक जीवन का सब विषय सिमट जाता है। इनकी दृष्टि से जीवन को जीने में किसी भी प्रकार का यदि अभाव है तो उसकी पूर्ति करना। तो उसके लिए छोटे-छोटे सेवा कार्य है। ये निरंतरता और सहजता से समाज के बीच में चलें तो इन सब शीर्षकों के अंतर्गत आने वाले ऐसे सब अभावों की पूर्ति सहज में होती है और जिस समाज जीवन में कोई अभाव नहीं है वही वास्तव में रामराज्य है।

रामराज्य युगों युगों तक इस धरती पर साकार हुआ और वहाँ किसी प्रकार का अभाव नहीं था। त्रिविध ताप भी नहीं थे। मानवता में किसी भी प्रकार के ताप का निवारण अपनी सामर्थ्य के बल पर हम करते हैं। यही सबसे बड़ा अध्यात्म भी है, ऐसा बताया गया है। तो उस दृष्टि से ऐसे सब अभावों की पूर्ति करने के लिए छोटे-छोटे सेवाकार्य समाज के बीच में चलाने की आवश्यकता है। अगर अपना समाज जीवन अभाव मुक्त होता तो इन सेवाकार्यों की कोई आवश्यकता नहीं थी। लेकिन हमारा एक बड़ा देश है। विशालतम समाज की रचना है। इसमें अभाव केवल भौतिक हैं, ऐसा नहीं है। यदि संस्कारों का अभाव है तो संस्कारों के अभाव की पूर्ति करना है। हमारे पुराने समाज जीवन में बहुत सारे दोष भी निर्मित हो गए। उस दृष्टि से यदि कोई न्यूनता निर्माण हुई तो उसको भी दूर करना है। तो इस दृष्टि से हम जो सेवा के काम की कल्पना लेकर चलते हैं, उसमें इन अभावों की पूर्ति करने के लिए छोटी-छोटी कुछ ऐसी व्यवस्थाएँ खड़ी करना। मैंने जैसा कहा कि यह निरंतरता से चलनी चाहिए। लेकिन कई बार लोग सेवा करते हैं तो उसके पीछे उनका कोई उद्देश्य रहता है। नाम की कामना रहती है। पुण्य प्राप्ति की कामना रहती है। स्वर्ग की कामना रहती है। हम परोपकार करेंगे तो हमको स्वर्ग मिलेगा इत्यादि। तो समाज की सुस्थिति निर्माण करने के लिए, सुपरिवर्तन लाने के उद्देश्य से कार्यकर्ता जो काम करते हैं, उसमें ऐसे सब उद्देश्य नहीं रहते। लेकिन अहेतुक भी नहीं कहना है क्योंकि हम जो काम करते हैं आजकल, वह अपने समाज को विधर्मियों से बचाना, धर्मांतरण से बचाना, ये भी उसके पीछे एक उद्देश्य रहता है। यानी सीधे-सीधे शब्दों में कहा जाए तो मैं जैसे विश्व हिंदू परिषद का सेवा कार्य करता हूँ। विश्व हिंदू परिषद का सेवा कार्य अहेतुक नहीं है। हेतुपूर्वक है और हेतु क्या है - समाज की सुरक्षा।

प्रचलित अर्थ में सेवा कैसे करते हैं? एक उत्साह आया सर्दियों में। गरीब लोगों को कंबल बाँटकर आ गए। अच्छा काम है, करना चाहिए। मना नहीं है परन्तु उससे समाज का परिवर्तन नहीं होगा। शोभायात्रा निकल रही है। एक भंडारा लगा दिया। यात्रियों को रोक रोककर कहते हैं कि आइए आपके लिए हलवा पूरी बनाया है। वो कहते हैं कि अभी-अभी पिछले भंडारे से हमने खाया है, पेट भरा हुआ है। तो ये कहते हैं कि हमने तो आपके लिए इतना कुछ बनाया। थोड़ा सा तो लेकर जाइए।

तो क्या ध्यान में आता है कि यह अभावों की पूर्ति के लिए नहीं है। यह अपने मन के किसी भाव की पुष्टि के लिए है। तो फिर जब परोपकार का भाव नहीं तो फिर सेवा क्यों करना है। किस भाव से करना है। कोई न कोई भाव तो रहेगा। तो यह विचार करना कि मुझे जो जीवन, योग्यता, क्षमता, श्रेष्ठता मिली है और भगवान की कृपा से जिस समाज के आधार पर यह विकसित हुई है, उस समाज के प्रति मेरा कुछ कर्तव्य है। इस समाज की सब श्रेष्ठ बातें हैं तो वह मेरे पुरुषार्थ पराक्रम से और बढ़ेगी और यदि कुछ न्यूनता है, दोष है, कमी कसर है, विकार है तो वह मेरे पुरुषार्थ पराक्रम से कम होगा। यह जो कर्तव्य भाव है, इस कर्तव्य भाव से हमें सेवा करनी चाहिए।

हमें हमेशा कर्तव्य भाव से हम सेवा करनी चाहिए। परोपकार के भाव से नहीं, किसी पर दया कर रहे हैं इसलिए नहीं, आत्मीयता के भाव से। तीर्थयात्री जा रहे थे। गर्मी के दिन थे। थोड़ा चढ़ाई का रास्ता था। एक छोटी बालिका अपनी गोद में एक बच्चे को लेकर वह चल रही थी। सहयात्रियों को ध्यान में आया कि अरे इतनी तेज धूप है, चढ़ाई का रास्ता है और यह कितना वजन लेकर चल रही है इस बच्चे का! तो किसी ने बड़ी दया भाव से उसको कहा कि 'अरे बेटा, तू तो बड़ा बोझ लेकर चल रही है।' उसने तमक कर कहा कि 'यह बोझ नहीं मेरा भाई है।' यानि भाव अगर उस प्रकार का है कि यह मेरा है, तो फिर वह बोझ नहीं लगता है। उसके भाई का काफी वजन रहा होगा लेकिन वह अपनत्व के कारण उसको सहजता से लेकर चल रही थी। तो यह मेरा समाज है, अपनत्व की इस अनुभूति से हमें समाज की सेवा करना चाहिए। यदि हम इस विचार को अपने जीवन में उतार सकें तो यह एक बड़ा योगदान होगा।

आनंदमय कोष के बिना मन की कली खिलेगी नहीं

- दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

जब एक बूंद अकेली होती है तो उसके साथ काफी सारे भय होते हैं। सूख जाने का, बिखर जाने का या खो जाने का परन्तु जब वही बूंद किसी सिंधु से मिल जाती है तो फिर उस सिंधु की विराटता, अजरता और अमरता उस बिंदु को प्राप्त हो जाती है। हम भी इस चैतन्य सागर के एक नन्हे से बिंदु हैं। बेचैनी तो होगी ही, जब तक बिंदु का सिंधु हो जाना घटित नहीं होगा। क्योंकि हमारा अस्तित्व मात्र शरीर के तल पर ही नहीं है। यदि केवल शरीर के तल पर ही हमारा अस्तित्व होता, तो हमें कोई बेचैनी नहीं होती। आप देखिये कि पशु-पक्षियों के जगत में कोई व्याकुलता नहीं है। वहाँ कोई बेचैनी नहीं है। वहाँ दुःख नहीं है। वहाँ कष्ट अवश्य हैं। कष्ट शरीर के तल पर होता है। गर्मी का, सर्दी का, आंधी का, बर्फीली हवाओं का या झुलसाती हुई लू का। उनको कष्ट तो होता है लेकिन दुःख नहीं होता, क्योंकि वो शरीर के तल पर हैं। हमारे पास शरीर के साथ मन भी है। मन को परिवर्तन चाहिए। अगर इस परिसर के द्वार पर ताला लगाकर आपको कह दिया जाए कि अब आप बाहर नहीं जा सकते, तो आपकी व्याकुलता देखने लायक होगी। यह आदेश आपके मन को बेचैन कर देगा लेकिन आप अपनी मर्जी से अपने कमरे के भीतर से चिटकनी लगाकर चौबीस घंटे उसमें बंद रह सकते हैं। क्यों? क्योंकि आपके मन को पता है कि यह आपकी स्वेच्छा से हो रहा है, आपकी राजी से हो रहा है। इसीलिए आप स्वयं स्वतः कैदी हो सकते हो लेकिन किसी दूसरे के द्वारा आपको प्रतिबंधित कर दिया जाए तो आपके मन में बेचैनी होना प्रारंभ हो जाएगी।

मन को क्या चाहिए? परिवर्तन। लेकिन मन को परिवर्तन क्यों चाहिए? आप अपने घर के फर्नीचर को बार-बार बदलते हो। क्यों? एक कपड़ा आपने पहना, कुछ समय बाद उसके प्रति आपके चित्त में उब पैदा होती है। क्यों? आपके मित्र बदलते रहते हैं। क्यों? क्योंकि आपके मन को सुख की आकांक्षा है। और यह भ्रम है बुद्धि को कि अगर स्थान का, व्यक्तियों का, वस्तुओं का परिवर्तन करेंगे तो हमें सुख मिल जाएगा। इस चक्कर में हम बहुत सारे परिवर्तनों के आकांक्षी हो जाते हैं। मन क्या चाहता है? हमारा मन सुखाकांक्षी है। वो सुख चाहता है लेकिन क्षणिक सुख आपको केवल उत्तेजना ही देता है। उदाहरण के लिए आप अपने प्रियजनों के साथ पाँच-सात घण्टों तक मिलते-जुलते, हँसते गाते हैं परन्तु उसके बाद आपको लगने लगता है कि हे भगवान, अब ये अपने-अपने घर चले जाएँ। उस उत्तेजना को आप ज्यादा देर तक नहीं जी सकते। किसी भी तरह की उत्तेजना, वह चाहे सुख की हो चाहे दुःख की, बहुत देर तक टिक नहीं पाती। आपने देखा या सुना होगा कि विदेशों के लोग कई बार बड़ी जल्दी अपने जीवनसाथी बदलते हैं। वो तलाक देंगे, दोबारा ब्याह करेंगे और उस ब्याह में पहले वाले भी गुलदस्ते लेकर उन्हें बधाई देने पहुँच जाते हैं। वहाँ लोग बड़ा आश्चर्य करते हैं कि भारत के लोग यह कैसे हैं जो एक ही व्यक्ति के साथ पूरी जिंदगी जी लेते हैं। एक बार स्वामी राम विदेश गए तो वहाँ कब्रिस्तान में एक कब्र पर एक स्त्री को पंखा झलते देखा। वो बड़े प्रभावित होकर उसे कहने लगे कि -'देवी! तेरे पैर छू लेने का मन करता है। हमारे यहाँ तो जीवित पतियों की सेवा करती है स्त्रियाँ और तू तो जो मर गया, उसकी कब्र पर भी पंखा झल रही है!' वो स्त्री बोली कि -'चक्कर में ना पड़ो महात्मा! मौसम जरा खराब है इसीलिए पंखा करके कब्र को सुखा रही हूँ क्योंकि जब तक पहले की कब्र सूख नहीं जाती, तब तक मैं दूसरा ब्याह नहीं कर सकती।'

हम भारत के लोग एक के साथ संतुष्ट कैसे रहते हैं? क्योंकि हमारे ऋषियों का प्रसाद हमारे पास है कि सुख परिवर्तन करके नहीं मिलेगा। जो अनुभूति किसी एक के साथ किसी एक स्थान पर आपको है उसका सच यही है कि उसका आकर्षण एक दिन विकर्षण में बदल जाता है। इसको आप सौ बार भी करके देख लो, तो अनुभव यही आने वाला है प्रत्येक आकर्षण एक दिन विकर्षण में बदल जाता है।

अमेरिका जैसा देश जिसके पास बहुत कुछ है, उनकी व्याकुलता कुछ अलग प्रकार की है और गरीब देशों के लोगों की आशा रोटी, कपड़ा और मकान के साथ छोटी-छोटी वस्तुओं से ही लगी हुई है। इसका अर्थ है कि जिनके पेट की भूख मिट गई, उनकी आत्मा की भूख जग जाती है। क्योंकि हम मात्र शरीर नहीं हैं। अब हम मन के तल पर आएँ, जिसमें सुख, प्रेम और सम्मान की आकांक्षा रहती है। अब हम बुद्धि के तल पर आएँ। बुद्धिमान लोगों को यदि बौद्धिक खुराक नहीं मिले तो उनको तृप्ति नहीं मिलती। जब तक हम अपने गुरुदेव का प्रवचन ना सुन लें, किसी बड़े महापुरुष, दार्शनिक व्यक्ति की किताब के दो-चार पन्ने ना पढ़ लें, हमारी बुद्धि को तृप्ति नहीं मिलती। बुद्धि को बौद्धिक खुराक चाहिए। यह उसकी खुराक है। शरीर की अपनी खुराक है, मन की अपनी खुराक है और बुद्धि की अपनी खुराक है। प्राणों की भी खुराक देनी पड़ती है, जिसको हम प्राणायाम इत्यादि करके पूर्ण करने का प्रयत्न करते हैं लेकिन आप अन्नमय कोष को, मनोमय कोष को और विज्ञानमय कोष को चाहे जितना तृप्त कर लो लेकिन जब तक आनंदमय कोष तृप्त नहीं होगा, आपके मन की कली खिलेगी नहीं।

पंच परिवर्तन से संभव हो सकेगा समाज परिवर्तन

- बजरंग बागड़ा
(अन्तर्राष्ट्रीय महामंत्री-विश्व हिन्दू परिषद)

इस साधना शिविर में कुछ साधने के लिए हम आए हैं। कोई लक्ष्य निर्धारित है और उस लक्ष्य को हम यहाँ साधने आए हैं। साधना का अर्थ सिर्फ तप, तपस्या, प्रयास, पढ़ना या सुनना ही नहीं है, किसी लक्ष्य को साधना है। वर्तमान में जो भारतीय समाज की जो दशा है परिस्थिति है, उसमें क्या-क्या करणीय है, ऐसे कुछ बिंदुओं पर समाज का ध्यान केंद्रित करने के निमित्त पाँच बिंदुओं का राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने चयन किया है, जिसे 'पंच परिवर्तन' का नाम दिया गया है। इन पाँच बिंदुओं पर यदि हम समाज को जागृत कर सके, तो इससे बहुत सारे विषयों का समाधान हो सकेगा।

कुटुम्ब प्रबोधन

आज वो भारतीय कुटुम्ब परम्परा टूट रही है, जिसके दम पर इस्लाम की आँधी में भी सनातन धर्म सुरक्षित रहा। इसके निमित्त हम कुछ बातें समाज का बता सकते हैं। प्रत्येक परिवार में दिन के कम से कम तीन भोजन होते ह। सुबह का अल्पाहार, दोपहर का भोजन और शाम का भोजन। आजकल बच्चों से लेकर बड़ों तक के स्कूल या ऑफिस टाइम अलग-अलग होते हैं फिर भी प्रयत्नपूर्वक एक समय का भोजन सभी ने साथ बैठकर करना चाहिए। प्रतिदिन कम-से-कम पन्द्रह मिनट का कोई भी भजन भाव, हनुमान चालीसा, कोई संकीर्तन, कोई आरती, कोई श्लोक जैसी पारिवारिक साधना पद्धति में घर के सभी सदस्य मिलकर भाग लें। सामूहिक रूप से सब एक साथ हो तब कुटुंब का भाव जागृत होता है। छुट्टी के दिन सब लोग कम-से-कम एक से डेढ़ घंटा सामूहिक रूप से बैठकर विभिन्न विषयों पर चर्चा करें। ये बहुत कठिन नहीं है, लेकिन इससे से जो भाव उत्पन्न होगा, वो समाज को मजबूती देने वाला होता है।

स्व का बोध

'स्व' यानि मेरा। सबसे पहले अपनी भाषा पर हमको अपना गर्व होना चाहिए। आप विश्व की अनेक भाषाएँ सीखिए क्योंकि सभी भाषाओं का ज्ञान होना अच्छी बात है परन्तु अपनी भाषा के प्रति प्रेम और उसके विस्तार का संकल्प भी होना चाहिए। ज्ञान के आधार के पर आप एक भाषा नहीं, अंग्रेजी नहीं अनेक भाषाएं सीखिए। साथ ही कभी भी दूसरी भाषाओं के लिए हमको अपनी भाषा का तिरस्कार करना, उपेक्षा करना या मन में ग्लानि का भाव लाना उचित नहीं है। गर्व के साथ में हमको अपनी स्थानीय भाषा में बातचीत करनी चाहिए। इसके बाद आता है अपना पहनावा। हर देश और प्रदेश की वेशभूषा वहाँ के मौसम की आवश्यकता के हिसाब से होती है। कई ठंडे देशों के लोग सिर पर टोपी, गले में टाई लगाते हैं, ताकि ठंड नहीं लगे। अब हम भारत में गर्मी के महीनों में भी कोट और टाई पहनकर ऑफिस में जाएँ तो ये बड़ा अजीब है। आप सोचिए और कितनी वैरायटी है हमारी अपनी वेशभूषा में। तो बजाय किसी की नकल करने के हमें हमेशा अपने 'स्व' में ही रहना चाहिए।

नागरिक कर्तव्य

अपने अधिकारों की मांग करते हुए हमें अपने राष्ट्र, समाज और धर्म के प्रति अपने कर्तव्यों का बोध भी रहना चाहिए। पहले कर्तव्य फिर अधिकार। हमारा देश हमारे द्वारा दिये गए करों से ही चलता है। क्या हम अपने सभी टैक्स समय से चुकाते हैं? क्या हम सड़कों पर चलते समय यातायात नियमों का पालन करते हैं? कभी भी हमारे मन में यह विचार ही नहीं आना चाहिए कि मैं कोई नियम तोड़ूँ। जो नियम समाज को एक व्यवस्थित रूप से चलाने के लिए बने हैं, उन सबका ठीक रूप से हम लोग पालन करें, इस प्रकार का भाव हमें समाज में स्थापित करना चाहिए। नियमों के पालन की हमारी एक मानसिकता बननी चाहिए जो भारत में अनेक कारणों से बिल्कुल बहुत कमजोर हो गई है। तो यह भाव हमको स्थापित करना है।

सामाजिक समरसता

जन्म के आधार पर कोई व्यक्ति ऊँचा या नीचा नहीं होता। विश्व हिंदू परिषद ने तो अपनी स्थापना के तुरंत बाद जो सबसे पहला काम हाथ में लिया वह इसी विषय का था। वर्ष 1969 में उडुपी में सम्पन्न हुए संत सम्मेलन में संतों ने, आचार्यों ने, विद्वानों ने गहन शास्त्रार्थ करके एक मत से घोषणा की, कि जिस प्रकार व्यवस्था समाज में चल रही है, वह शास्त्र सम्मत नहीं है। सारे हिंदू सहोदर हैं। सहोदर यानि एक ही माँ के गर्भ से उत्पन्न हुए हैं। तो हमें सामाजिक समरसता के लिए समाज के बीच जाकर कार्य करना चाहिए।

पर्यावरण रक्षा

ब्रह्माजी की इस सृष्टि में उन्होंने जो भी कुछ हमें दिया है, उसका उपयोग करने की सीमा हम इतनी लांघ चुके हैं कि अब पृथ्वी को हमसे खतरा उत्पन्न हो गया है। हम वनों को भी काटते हैं, पेयजल को प्रदूषित करते हैं, वायुमंडल में विभिन्न प्रकार की जहरीली गैसों का उत्सर्जन करते हुए ओजोन परत में छेद करके स्वयं की विनाशलीला का रच रहे हैं हिंदू संस्कृति कहती है कि 'त्यागपूर्वक भोगो।' लेकिन हमने क्या किया! हमने दोहन के स्थान पर शोषण किया। कहते हैं कि तीसरा विश्वयुद्ध जल संसाधनों पर कब्जों के लिए होगा। तो हमें सावधान होकर अपने पर्यावरण की रक्षा के लिए समाज के बीच जागरूकता फैलानी चाहिए ताकि इस सुन्दर ग्रह को बचाया जा सके। हम अपने बच्चों को ये संस्कार दें कि अपना कचरा कहीं और न फेंकना चाहिए, उसे डस्टबिन जैसी सही जगहों पर ही डालना चाहिए। हम उन्हें उनके जन्मदिनों पर एक पौधा रोपने की प्रेरणा दें। केवल पौधे को रोपा ही नहीं जाए बल्कि उसके बड़ा होने तक उसे पानी देकर पोषण प्रदान करने का संस्कार भी हम बच्चों को प्रदान करें।

दैनिक उपासना एवं जीवनचर्या

- अरुण नेटके
(मंदिर अर्चक पुरोहिम आयाम प्रमुख-विश्व हिन्दू परिषद)

वर्तमान समय में यह पूरी दुनिया अनेकों बीमारियों की चपेट में है। क्या इलाज है इनका? लाइफ स्टाइल चेंज करनी पड़ेगी। उसी लाइफ स्टाइल को अपनाना पड़ेगा जो हमारी प्राचीन वैदिक जीवन पद्धति बताती है। एक शब्द है-जैविक घड़ी। ये क्या है? हमारे ऋषि मुनियों ने हमें बताया था कि ब्रह्म मुहूर्त पर जागना चाहिए। यही जैविक घड़ी है। अच्छी दिनचर्या के लिए इसका अध्ययन सबने करना चाहिए।

जैविक घड़ी के अनुसार हमारी जीवन या प्राण शक्ति दो-दो घंटे के लिए शरीर में अलग-अलग जगहों पर सक्रिय रहती है। सुबह 3 से 5 बजे तक यह यह फेफड़ों में रहती है। इस समय जो लोग भ्रमण करते हैं, उनके फेफड़े हमेशा स्वस्थ रहते हैं। 5 से 7 बजे तक यह बड़ी आँत में रहती है। इस समय में जिनका पेट पूरी तरह से साफ होता है, उन्हें पेट की कोई बीमारी कभी नहीं हो सकती। 7 से 9 बजे तक प्राण शक्ति पेट में रहती है, इसलिए यह समय खाने के लिए सर्वाधिक अच्छा माना गया है। 11 से 1 बजे तक जैविक ऊर्जा का हृदय में स्थान रहता है। हृदय में केंद्रित रहती है। शाम का भोजन सूर्यास्त से पहले करने का विधान हमारे ऋषियों ने हमें दिया क्योंकि जब तक सूर्य भगवान की किरणें धरती पर पड़ती हैं तभी तक हमारी जठराग्नि प्रबल होती है और भोजन ठीक से पचता है। रात्रि का भोजन निषिद्ध माना गया है।

शाम को 7 से 9 बजे तक हमारे मस्तिष्क में हमारी प्राण ऊर्जा रहती है। इसीलिए आपने भी देखा होगा कि अधिकांशतः प्रवचन या व्याख्यान के कार्यक्रम इसी अवधि में सम्पन्न होते हैं। क्योंकि सुनने के लिए यह समय बहुत अच्छा माना गया। जैसे ब्रह्म मुहूर्त पर सुना हुआ भूलते नहीं कभी, वैसे ही संध्याकाल का भी सुना हुआ या पढ़ा हुआ कभी नहीं भूला जाता। रात्रि 9 से 3 बजे तक निद्रा की अवधि रहती है। हमारे धर्म शास्त्रों में भी कहा गया समय है कि इस समय निद्रा लो। रात्रि 1 से 3 बजे तक भी यदि हम नहीं सोए तो न्यूरॉन्स क्रिएट होना बंद हो जाते हैं। अस्सी करोड़ से ज्यादा सेल्स हमारे शरीर में होते हैं। ब्रेन में ही लाखों सेल्स है जो हमारे मस्तिष्क को अच्छा रखते हैं। उनकी क्रिएटिविटी का समय होता है रात्रि 1 से 3 बजे तक। जो लोग इस अवधि में भी शांति से नहीं सोते, वो नई सोच रख ही नहीं सकते। क्योंकि उनके ब्रेन सेल्स काम करना बंद कर देते हैं और नए सेल्स क्रिएट होना बंद हो जाते हैं। तो लोग वहीं पर थक कर रुक जाते हैं, कुछ नया सोचने की उनमें क्षमता नहीं होती क्योंकि वे कभी समय पर सोये नहीं।

तड़के 3 बजे के बाद जाग जाना चाहिए क्योंकि इस समय फेफड़ों का काम शुरू हो जाता है। इसीलिए सभी महापुरुष इस समय तक जाग जाते हैं तो वो स्वस्थ रहते हैं शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक रूप से। तो यह जो सामान्य दिनचर्या है हमारी कि कितने बजे उठना, कितने बजे भोजन करना, कितने बजे क्या अध्ययन करना, इन सब बातों का विचार हमारे पूर्वजों ने किया था। उसका पालन जब तक चलता रहा तब तक यहाँ का व्यक्ति हजार साल तक जीता रहा और सारी

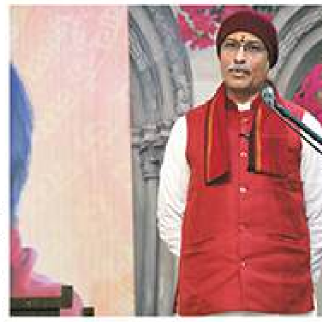

दुनिया को अच्छे विचार देता रहा। यह इसी आधार पर क्योंकि दिनचर्या अच्छी होनी बहुत आवश्यक है। शरीर यदि अच्छा है तो सब कुछ अच्छा है और यदि शरीर अच्छा नहीं है तो विचार भी काम नहीं करते। यह शरीर धर्म का साधन है तो मुझे इसे अच्छा रखना चाहिए। यह भगवान का मंदिर है इसे पवित्र भी रखना चाहिए, स्वच्छ भी रखना चाहिए, शुद्ध भी रखना चाहिए, सुरक्षित भी रखना चाहिए और स्वस्थ भी रखना चाहिए। हमारे धर्मग्रंथों ने कहा है कि कुशलतापूर्वक किया गया हर कार्य योग के समान ही श्रेष्ठ होता है। शरीर, मन, बुद्धि का विकास यह वैदिक जीवन पद्धति की विशेषता है, इनका पहले संतुलन करना चाहिए। हमें समझना चाहिए कि मेरा शरीर जो भगवान द्वारा मुझे दिया गया है, इसे ऐसा ही मुझे भगवान को लौटाना है क्योंकि यह मेरा नहीं, केवल मुझे दिया गया है। यह हमारा संकल्प होना चाहिए कि मैं इसे जर्जर नहीं करूंगा, इसकी रक्षा करूंगा।

हमारे ऋषि मुनियों के द्वारा हमें प्रदान की गई जीवन पद्धति को, जीवन चर्या को और अपनी आश्रम व्यवस्था को समझकर उसे अपने जीवन में ढालना, हमारे हाथ में है। एक बात कही गई है कि बड़ा आदमी बनना अच्छी बात है किंतु अच्छा आदमी बनना बड़ी बात है। हमें बड़ा बनना है, अच्छा बनना है तो अच्छा बनने का ये मार्ग है जो हमने चयन किया है। इस देश में उन्हीं का जन्म होता है जो भाग्यशाली होते हैं। इस धरा पर जन्म लेने के लिए भी संचित प्रारब्ध अच्छा होना चाहिए। यह देवों की भूमि है। यहाँ साक्षात ईश्वर आते हैं, जो मानव रूप धारण करके हमें जीना सिखाते हैं। 'रसूल' और 'मैसेंजर' तो कहीं और भेजे जाते हैं। तो हमारे शास्त्रों ने, हमारे वेदों ने, हमारे वेदकालीन जीवन ने यह परंपरा हमको दी है। आप तो सर्वश्रेष्ठ और भाग्यशाली है कि साक्षात दीदी माँ आपके साथ हैं। उनकी देखरेख में आपका जीवन चल रहा है, इससे और ज्यादा भाग्य जीवन में क्या चाहिए। मैं चाहता हूं कि इस ध्यान शिविर में बताई जा रही बातों का आप गहराई से अध्ययन और चिन्तन-मनन करें। इसके बाद वो आचरण में भी आएँ। जो हम बोलेंगे, जो हम सोचेंगे वो हम करेंगे और जो हम करेंगे, उससे ही सबका कल्याण होगा। इसलिए वैदिक दिनचर्या के संदर्भ में बहुत कुछ और जानते हुए आप अपना आध्यात्मिक विकास कर सकते हैं। इस प्रकार से हम अपने ऋषि-मुनियों की बताई जीवनशैली पर चलकर तथा औरों को इसके लिए प्रेरित करके एक सुखी एवं समृद्ध समाज का निर्माण कर सकते हैं।

वात्सल्य गंगा अभियान

संन्यास संहिता

- स्वामी सूर्यानन्द गिरि

अभी जिस विषय की चर्चा हम यहाँ करेंगे, वो पूज्य दीदी माँ जी की अनुमति से मैं आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। हम लोग संन्यासी होकर पूर्णकालिक हैं। मैं गृहस्थ पूर्णकालिकों को भी संन्यासी जैसा ही मानता हूँ। उन्होंने केवल वेश नहीं बदला है, वे सेवा में तो हैं ही। कोई गृहस्थ जीवन में है या संन्यासी जीवन में, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन बिना चरित्र निर्माण के व्यक्ति का व्यक्तित्व दिखाई नहीं देता है, इसे ध्यान में रखा जाना चाहिए।

इस संसार में सबके गुण भी हैं और दोष भी। लेकिन हमको तो गुणों की वृद्धि करना है और अपने दोषों को मिटाना है। दोष मिटेंगे तभी हम इस रास्ते पर आगे बढ़ सकेंगे। तो हमारी दिनचर्या ऐसी चाहिए, जिससे हम अपने को ठीक कर सकें। अगर हम चौबीसों घंटे बहिर्मुख ज्यादा अधिक और अंतर्मुख कम रहते हैं तो उसके कारण हमारी जो वृत्ति है वो लोगों की तरफ ही जाती है। जिस दिन हम अंतर्मुखता के लिए चेष्टा करेंगे तो हमारी बहिर्मुखता अपने आप छूट जाएगी। उसको मिटाना नहीं पड़ेगा। वो अपने आप कम हो जाएगी। उदाहरण के लिए, हम सोशल मीडिया पर बहुत व्यस्त रहते हैं। कभी-कभी पता भी नहीं चलता कि हमको दो घंटे हो गए कि चार घंटे। परमात्मा के चिंतन में हम कितनी देर रहे? कितनी देर उपासना में रहे? कितनी देर हम पूजा में रहे? तो वो नगण्य है।

ये शरीर ही हमारा साधन है। साध्य नहीं है ये लेकिन साधन है परमात्मा की प्राप्ति के लिए, तो इसको ठीक रखना भी हमारा ही काम है। तो सबसे पहले इसकी चिंता करना। इसका संचालन ठीक से हो, इसके लिए आसन हैं योग है, प्राणायाम है, सूर्य नमस्कार है। कुछ हमारा स्वाध्याय भी होना चाहिए। दीदी माँ इतना अच्छा बोलती हैं। गुरुदेव के भी बहुत सारे अच्छे-अच्छे प्रवचन हैं। तो सुबह हम अपने मन को एकाग्र करके उनके प्रवचनों को ध्यान से सुनें। अच्छी पुस्तकें हैं। उपनिषद हैं। उनका भी स्वाध्याय करना चाहिए।

हम इतने सारे प्रकल्प चला रहे हैं, इतने सारे हमारे आश्रम हैं, उनमें एकरूपता आए। अपने विचार शुद्ध करने के लिए जब तक परमात्मा के सामने हम उपासना नहीं करेंगे, पूजा नहीं करेंगे तब तक वो नहीं आएगी। तो संस्थान के सभी लोगों के साथ सामूहिक प्रार्थना होनी चाहिए।

जिस जीवन में हम हैं उसका वेश कैसा होना चाहिए? तो वेश की शुद्धता जरूर चाहिए हमको। साफ-सुथरा तो चाहिए ही लेकिन किस प्रकार का पहनना है, ये भी हमको देखना चाहिए। हम ऐसे ही कुछ नहीं पहन सकते। हम संन्यासी होने के नाते समाज से थोड़े अलग हैं क्योंकि हमने समाज को छोड़ा है। लेकिन समाज हमको बहुत पैनी नजर से देखता है। कभी-कभी हमको लगता होगा कि हमको कोई नहीं देखता है लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है। समाज जिन बातों को दूसरों में नहीं खोजना चाहता, उनको हममें खोजता है। वो खुद भी ऐसा नहीं है लेकिन हमसे अपेक्षा रखता है कि साधु होने के नाते आपको ऐसा होना चाहिए। गलत जगह खड़े हो जाएंगे तो टोक देगा। गलत पहन लेंगे तो भी टोक देगा। गलत सुन रहे होंगे तो भी कोई न कोई टोक देगा। तो आप कहोगे कि भई इसको क्या मतलब है ये हमको क्यों टोकता है? वो हमसे अपेक्षा रखता है कि आप अच्छे हो, चरित्रवान हो तो फिर चरित्रवान ही रहो। दिखाई भी देना चाहिए। चरित्र से हमारा व्यवहार टपकना चाहिए। इसलिए हमारा हम जहाँ पर रहते हैं वहाँ का वातावरण एकदम पवित्र और शांत वातावरण हमको चाहिए।

सेवा कार्य सेवा कार्य हमको जरूर करना है। क्यों? क्योंकि चौबीसों घंटे तो साधना हो नहीं सकती। समय बचेगा तो उसमें क्या करेंगे? सेवा कार्य करेंगे, जिसमें हमारी रुचि हो। अपने को व्यस्त रखिए। तो हम हमारा जीवन सुधर जाएगा। तो व्यस्त रखने के लिए क्या करना? समाज में जाना। लोगों के बीच कहेंगे क्या? तो देश के बारे में, धर्म के बारे में, समाज में व्याप्त बुराइयों के बारे में, उनको कैसे दूर किया जा सकता है, यह सारी बातें बताना।

अपने हिन्दू धर्म के साथ दूसरे धर्मों के बारे में भी हमको जानकारी रखनी चाहिए। ईसाई षडयंत्र करते रहते हैं, मुस्लिम षडयंत्र करते रहते हैं। समाज को उनसे सावधान करना। राष्ट्र के लिए हमारा क्या कर्तव्य है? हम केवल अपने ही लिए ही करते रहेंगे या राष्ट्र और समाज के लिए भी कुछ करेंगे। तो उसके लिए हमारा क्या योगदान हो सकता है, ये विचार करना। धर्मांतरण, गौहत्या विरोध, आतंकवाद, सामाजिक समरसता और पर्यावरण रक्षा जैसे गंभीर विषयों की जानकारी भी हमें होनी चाहिए।

कई बार विदेशों में भारतीयों को हीनता की दृष्टि से देखा जाता है। क्यों? क्योंकि प्रायः हम बुराई स्वयं ही करते रहते हैं। तो हम अपनी बुराई नहीं करें। अपने गौरवशाली इतिहास के बारे में जानना और दुनिया को बताना चाहिए। हमारे ऋषि-मुनियों ने जो खोजें कीं, उन्हीं के आधार पर वर्तमान तकनीक टिकी है। उदाहरणों के साथ इन बातों को अपने प्रवचनों में रखें।

हमारे देवी-देवताओं के प्रति लोग बहुत अश्रद्धा रखते हैं। विधर्मी कहें तो अलग बात है लेकिन हिन्दू ही अश्रद्धा करते हैं। हम अपने देवी-देवताओं के बारे में, उनकी शक्तियों के बारे में प्रचार-प्रसार करें। तीर्थों में जाने से हमको क्या प्राप्त होगा। हमारी पवित्र नदियों के बारे में, हमारे प्राचीन संस्कृति केन्द्रों के बारे में लोगों को बताना चाहिए।

हिन्दू समाज में 'सामाजिक समरसता' इस समय का सबसे चिंतनीय विषय है। क्योंकि अपने क्षुद्र स्वार्थों के लिए अनेक राजनैतिक दल हिन्दू समाज को जातिगत रूप में बाँट रहे हैं। इस भेदभाव को हम कैसे मिटा सकते हैं, इसका प्रयत्न करना चाहिए। इसके लिए सहभोज जैसे ऐसे कुछ कार्यक्रम करने चाहिए, जिनमें हिन्दू समाज के सभी वर्गों के लोग सम्मिलित हों। हम कभी-कभी छुआछूत का भाव मिटाने के लिए तथाकथित निम्न वर्ग की बस्तियों में जाते हैं, उनके साथ भोजन भी करते हैं परन्तु कभी उनको भी अपने घर बुलाइए। उनको सम्मानित कीजिए। सबके साथ बिठाईए। भोजन कराईए। उनको आपसे केवल प्रेम चाहिए। अगर आपने प्रेम दिया तो यह इतना हिन्दू समाज इतना सशक्त होगा जिसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते।

धर्म के साथ हमें पर्यावरण की बात भी करनी होगी। पर्यावरण है, तो जीवन है। आज के युग में पैदावार के चक्कर में अंधाधुंध रूप से फर्टिलाइजरों का उपयोग हो रहा है, जिनके कारण शरीर में पचास प्रतिशत तक बीमारियाँ हो रही हैं। इस समस्या से लड़ने में भी हमारा योगदान चाहिए। तो किसानों को प्रेरित करें कि फर्टिलाइजर आधारित खेती के स्थान पर जैविक खेती करें। गौमाता की सेवा करें। उसके गोबर, गौमूत्र का उपयोग खाद के रूप में किया जा सकता है।

हमने अपने जीवन का कोई लक्ष्य तय किया है कि हम क्या बनना चाहते हैं? तो सबसे तो शुरुआत यहीं से होना चाहिए कि हम बनना क्या चाहते हैं और जा कहाँ रहे हैं। आप संन्यासी होकर भी यदि निःस्वार्थी नहीं है तो आप इस रास्ते पर आगे नहीं जा सकते। आपको स्वार्थ छोड़ना पड़ेगा। दूसरों के लिए जो आप करते हैं उसके प्रतिफल में किंचित मात्र भी अपेक्षा आपको नहीं करनी है। बहुत सारे लोग जो सेवा कार्य करते हैं, वह सम्मान प्राप्त करने के लिए करते हैं। हमें इस इच्छा से दूर रहकर सेवाकार्य करने चाहिए।

सामाजिक जीवन में हमेशा पारदर्शिता होनी चाहिए। सामाजिक सेवा कार्य करने के लिए धन की आवश्यकता हमेशा ही बनी रहती है। इसके बिना कोई काम होता नहीं। धन संग्रह हम सबको करना होता है और हमारी योग्यता के आधार पर ही कोई हमें धन देता है। योग्यता, अकाउंटेबिलिटी और पारदर्शिता अगर हमारे चरित्र में होगी आपको कभी भी धन की कमी नहीं रहेगी। हमेशा ख्याल रखना है कि समाज का धन समाज के लिए है, मेरे लिए नहीं। तो अपने ऊपर उसमें से एक पैसा भी खर्च नहीं करना। सारा धन समाज के लिए। हमारी संस्था के लिए कहीं से धन आया है तो उसकी रसीद कटनी चाहिए और वह धन बैंक भी जाना चाहिए।

हम संन्यासी हैं तो हमें अपने बैंक अकाउंट क्यों खोलना? आश्रम भी क्यों बनाना? हम समाज के हैं और समाज हमारा है। आपकी दैनिक व्यवस्थाओं की, आवास की, भोजन की सब चिंता जब समाज करता है, व्यवस्थाएँ भी करता है तो फिर हमें व्यक्तिगत धन संग्रह की क्या आवश्यकता? पूज्या दीदी माँ जी ने अपने संन्यासी जीवन में जो कष्ट सहे, अगर हममें से किसी को सहना पड़ें तो हम संन्यासी जीवन से हाथ ही जोड़ लेंगे कि नहीं हमको संन्यास नहीं लेना है। अगले जन्म में देखेंगे कभी, इस जन्म में तो नहीं चाहिए हमको संन्यास।

अपने-अपने स्थानों पर पाँच चित्रों के बारे में हमने विचार किया है। श्री सर्वमंगला माता, आदिगुरु पूज्य शंकराचार्य जी महाराज, पूज्य दादागुरु परिव्राजकाचार्य स्वामी श्री अखण्डानन्द जी महाराज, पूज्य गुरुदेव अनन्तश्री विभूषित युगपुरुष जी महाराज एवं पूज्या दीदी माँ जी के चित्र हमार संस्था के प्रत्येक कार्यालय अथवा मंदिर में होने ही चाहिए। हम जहाँ पर भी सत्संग या प्रवचन कर रहे हैं, वहाँ पर भी ये पाँचों चित्र हमको अवश्य लगाने चाहिए।

हमको अपना प्रत्येक कार्य परमशक्ति पीठ को लोकप्रियता के साथ श्रद्धाकेन्द्र बनाने के लिए करना चाहिए। यदि हम कहीं कथा कह रहे हैं तो उसके पोस्टर या बैनर हमारा फोटो नहीं होना चाहिए। कौन कथा कह रहा है, आप लिख सकते हैं। इस हेतु अपना प्रचार भी नहीं करना चाहिए। क्योंकि उससे हमारे अंदर अहंकार आएगा। तो अपनी प्रसिद्धि, अपना नाम, अपना फोटो, प्रचार इससे थोड़ा बचके रहिए। परमशक्ति पीठ का प्रचार कीजिए। दीदी माँ जी का प्रचार कीजिए।

अपने किसी भी आयोजन में स्थानीय स्तर पूज्य देवी-देवताओं और महापुरुषों के चित्र भी हमको लगाने चाहिए। सम्पूर्ण वर्ष के ऐसे पर्व-त्यौहारों का एक कैलेंडर जरूर बनाना चाहिए जिन्हें सार्वजनिक रूप से मनाया जाता है। समाज के साथ उनको ऐसे आनन्दपूर्वक मनाईये कि अगले वर्ष तक लोग उनकी प्रतीक्षा करें। ये जो उत्सव हैं, समाज को नई ऊर्जा प्रदान करते हैं। ऐसे अवसरों पर दीदी माँ जी के प्रवचन इत्यादि को बड़े स्क्रीन पर भी चलाना चाहिए ताकि लोगों को उनका लाभ मिल सके।

कृष्णा ब्रह्मरतन विद्या मन्दिर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

वृन्दावन

विगत 17 जनवरी को वात्सल्य ग्राम में स्थित कृष्णा ब्रह्मरतन विद्या मन्दिर का वार्षिकोत्सव 'अंकुरण' अत्यन्त ही हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। आयोजन का शुभारम्भ पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी एवं मुख्य अतिथि श्री जय कुमार जी (संस्थापक-वेस्टर्न रोडवेज, मुम्बई) के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। सर्वप्रथम छात्राओं ने अभिनय के साथ गणेश वन्दना प्रस्तुत कर प्रथम देव का आह्वान किया। अन्य छात्र-छात्राओं ने मंचीय प्रस्तुति देते हुए योगासन के महत्व को दर्शाया। इसके बाद वन्य जीवन पर नृत्य नाटिका का मंचन कर पर्यावरण संरक्षण का सन्देश दिया गया, जिसे दर्शकों ने खूब सराहा। कत्थक तथा भरत नाट्यम ने भी अपनी छटा बिखेरी। पन्ना धाय प्रसंग से जुड़ी एक नाटिका ने उपस्थिति सभी लोगों को भावविभोर कर दिया। हनुमान चालीसा का अभिनय के साथ गायन हुआ। ऑपरेशन सिन्दूर की नाट्य प्रस्तुति देखकर दर्शकगण देशप्रेम के भाव से भर उठे। समूचा परिसर भारत माता के जयकारों से गूंज उठा। महारास के बाद वन्दे मातरम की प्रस्तुति ने आयोजन को सम्पूर्ण किया। स्कूल के विद्यार्थियों की

सम्पूर्ण प्रस्तुतियों ने उनकी प्रतिभा एवं योग्य प्रशिक्षण को उजागर किया। इस अवसर पर श्री संजय भैयाजी, सुश्री सुमनलता जी, स्वामी सत्यशील जी, साध्वी शिरोमणि जी, श्री जयभगवान अग्रवाल, श्री महेश खण्डेलवाल, श्री रविकान्त गर्ग, श्री ओम प्रकाश बंसल, श्री सोहन कुमार झा, श्री आर. पी.सिंह एवं श्री नवीन मित्तल सहित अनेक गणमान्यजनों की उपस्थिति ने आयोजन को प्रतिष्ठित किया। मंच संचालन श्रीमती विनीता, कु. राजनन्दिनी और आयशा ने किया। अन्त में श्री योगेन्द्र सिंह ने आभार व्यक्त किया।

दीप प्रज्ज्वलन के साथ आयोजन का शुभारंभ

विद्यालय प्राचार्या पूज्या दीदी माँ का स्वागत वन्दन करते हुए

कृष्णा ब्रह्मरतन विद्या मन्दिर के विद्यार्थियों की प्रस्तुतियाँ देखते हुए पूज्या दीदी माँ जी एवं अन्य गणमान्यजन

कृष्णा ब्रह्मरतन विद्या मन्दिर - शिक्षा का एक वटवृक्ष

-दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

कृष्णा ब्रह्मरतन विद्या मन्दिर के बच्चों ने अपने वार्षिकोत्सव में जो शानदार प्रस्तुतियाँ प्रदान कीं, उन्हें देखकर मन भावविभोर हो गया। पर्यावरण और राष्ट्रीय चुनौतियों से लेकर सीमा पर खड़े प्रहरी के साथ अपने चित्त को जोड़ने के साथ अन्याय और अत्याचार झेलती हुई नारी का चंडी रूप देखते हुए हम सब रोमांचित हुए।

आज आपको बताते हुए गर्व होता है कि बहुत ही सीमित साधनों के बीच कृष्णा ब्रह्मरतन विद्या मन्दिर प्रारंभ हुआ था। 'संस्कार केंद्र' के नाम पर हम लोग वृक्षों के नीचे बैठकर बच्चों को कुछ देने का प्रयत्न कर रहे थे। निर्मित होते वात्सल्य ग्राम के बीच हमको लगता था कि इतना बड़ा इंफ्रास्ट्रक्चर बनते-बनते तो बहुत देर हो जाएगी, इसीलिए यहाँ जितने भी श्रमिक काम कर रहे थे, उन्हीं के बच्चों को लेकर यह विद्यालय प्रारंभ हुआ। पहले वृक्षों के नीचे बैठकर कक्षाएँ शुरू हुईं, फिर एक छोटा-सा शेड मिला। इसके बाद आठ-दस कमरों की बिल्डिंग बन गई। आज कृष्णा ब्रह्मरतन विद्या मंदिर एक वटवृक्ष की तरह खड़ा है। हमारे आसपास के क्षेत्रों से बड़ी संख्या में बच्चे यहाँ पढ़ने आते हैं।

समाज की अनेक विसंगतियों के बीच, सनातन धर्म के विरुद्ध अनेक षड्यंत्रों के अंधेरे के बीच में कृष्णा ब्रह्मरतन विद्या मन्दिर एक दैदिप्यमान सूर्य की तरह उदयीमान है। इसका उद्देश्य है शिक्षा के साथ बच्चों को सुसंस्कार प्रदान करना। इसके लिए मैं अमेरिका निवासी हमारे आदरणीय श्री ब्रह्मरतन अग्रवाल जी को भी बहुत-बहुत साधुवाद देती हूँ, जिन्होंने अपने योगदान से इस विद्यालय की बिल्डिंग बनाई। अभी यहाँ पर बहुत सारे कार्य चल रहे हैं, जो पूर्णता की ओर अग्रसर हैं।

इस विद्यालय की प्रधानाचार्या से मैं कहना चाहती हूँ कि आपके हाथों में जो बच्चे हैं सीमा जी, वो अभी गमले में लगे पौधे के समान हैं, जिन्हें आपकी कार्यकुशलता ने भविष्य के वटवृक्ष बनाना चाहिए।वो गहराई तक जाने के साथ ही आकाश की अनन्त ऊँचाईयों तक भी जाने चाहिए। उन्होंने अपने माता और पिता की प्रतिकूल अवस्थाओं को जिया है, भोगा है, उसके दंश को झेला है। ऐसी संतानें आपके पास हैं और आपकी कार्यक्षमताओं ने उनको और निखारना चाहिए। आज की इन भव्य सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में इनके प्रतिभागी रहे एक-एक बच्चे की जो भाव भंगिमाएँ थीं, उनकी आँखों की जो चमक थी, वो महानगरों के बच्चों की आँखों में भी देखने को नहीं मिलती। गाँव की धूल और सूरज के ताप में यह बीज अंकुरित हुए हैं। अभी जब नारी शक्ति का प्रदर्शन हो रहा था तो मुझे लगा एक बेटी में सचमुच चंडी माँ जागृत हो गईं। उसके शरीर में कंपन हो रहा था। ऐसा भाव था उसके चेहरे पर जिसे शायद बड़े-बड़े कलाकार भी व्यक्त ना कर सकें। किसी पात्र को अपने अन्दर जीकर अभिनय करने के फलस्वरूप ही ऐसी भाव-भंगिमाएँ कलाकार के मुख पर आ सकती हैं। कृष्णा ब्रह्मरतन विद्या मंदिर के अधिकांश छात्र-छात्राएँ ऐसे परिवारों से आते हैं जिनकी आर्थिक पृष्ठभूमि अत्यन्त की कमजोर है। मुझे विश्वास है कि इस स्कूल के शैक्षणिक और सांस्कृतिक वातावरण को पाकर वो निश्चित ही अपने जीवन का समग्र विकास करते हुए भविष्य में अपनी प्रतिभा के बल पर अपने परिवार को समृद्ध स्थिति तक लाने में सफल होंगे। इस स्कूल के वार्षिकोत्सव में आप सबकी मेहनत से आपका यह पहला प्रयास सफल हुआ है। मैं समस्त विद्यालय परिवार को शुभाशीष प्रदान करती हूँ। आपकी जय जयकार है। आगे बढ़िए, आकाश आपकी सीमा है।

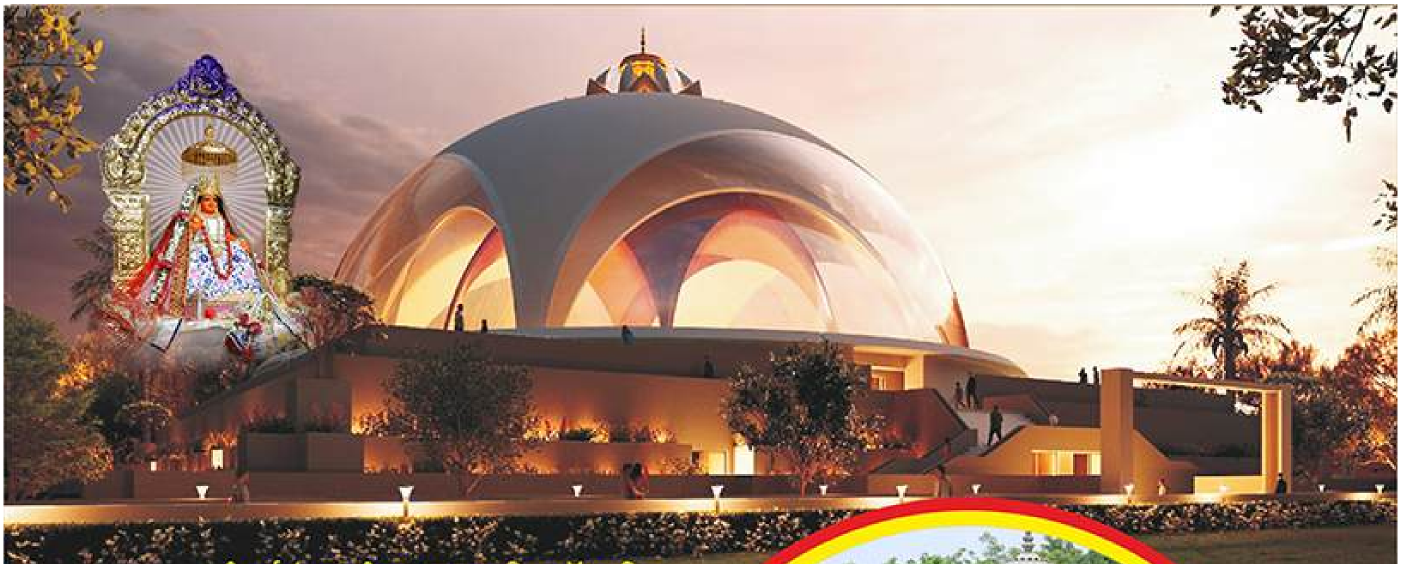

श्री सर्वमंगला पीठम् का प्रस्तावित मॉडल चित्र

वात्सल्य ग्राम वृन्दावन में निर्माणाधीन

श्री सर्वमंगला पीठम्

विशेषताएँ :

- लगभग डेढ़ लाख वर्गफीट क्षेत्रफल में विस्तारित एवं एक सौ चौदह फीट की ऊँचाई लिए हुए श्री सर्वमंगला पीठम् शिल्पकला की दृष्टि से अद्वितीय होगा।
- रज, तम और सत्व गुणों को प्रदर्शित करती इसकी तीन पारदर्शी छतें मध्य से बिना किसी सहारे के निर्मित होंगी।
- इन विशाल छतों के ठीक नीचे माँ सर्वमंगला अपने सृजनात्मक, कल्याणक, वात्सल्यमयी तथा माधुर्य रुप में विराजेंगी।
- पीठम् की तल मंजिल पर एक अत्याधुनिक प्रदर्शनी होगी, जिसके माध्यम से सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग में भारतीय नारी की भूमिका के सुनहरे अध्यायों को दर्शाया जाएगा। प्रथम मंजिल पर माँ सर्वमंगला माता के चारों ओर चलित परिक्रमा पथ होगा।
- मन्दिर के चारों ओर स्टेडियमनुमा सीढ़ियों का निर्माण किया जा रहा है, जहाँ बैठकर श्रद्धालुगण माता का मनोहारी दर्शन कर सकेंगे। मन्दिर भवन के चारों ओर नयनाभिराम बाग–बगीचे भी होंगे, जिनमें बैठकर श्रद्धालुओं को अनुपम शान्ति का अनुभव होगा।

श्री सर्वमंगला पीठम् के निर्माण में

एक ईट हेतु मात्र 1100/– का सहयोग समर्पित कर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

आप अपनी सहयोग राशि का चेक अथवा डिमाण्ड ड्राफ्ट 'परमशक्ति पीठ' के नाम से सम्पूर्ण भारत में किसी भी शाखा से जमा करवा सकते हैं।

5,00,000/- (पाँच लाख रुपयों) की सहयोग राशि समर्पित कर 'माँ सर्वमंगला न्यास' के न्यासी बनने हेतु सम्पर्क करें – 011-22238751, 22238757

बैंक का नाम : यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
खाते का नाम : परमशक्ति पीठ
खाता संख्या : 520101244630425
IFS Code : UBIN0905321
MICR : 110026344
शाखा : सी–50, प्रीत विहार, दिल्ली

कन्यादान

आह्वान

सौभाग्यशाली होते हैं वो वर और वधु जो सन्त शक्तियों के आशीर्वादों की छत्रछाया में दाम्पत्य जीवन की डोर से बँधते हैं। परमपिता परमेश्वर की इसी असीम अनुकम्पा की पात्र बन रही हैं, वात्सल्य परिवार की बेटियाँ। उनको आध्यात्मिक शक्तियों के सानिध्य में समाज के प्रतिष्ठित परिवारों की बहू बनते देखना अतीव आनन्द के क्षण होते हैं। परमशक्ति पीठ के माध्यम से हम उनके घर बसाने की पुण्य कार्य में संलग्न हैं। आप भी इस कार्य में उनके कन्यादान के सहभागी बनकर सामाजिक योगदान प्रदान कर सकते हैं।

सहयोग हेतु सम्पर्क करें

परमशक्ति पीठ
लव–102, अग्रसेन आवास,
66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, पटपड़गंज,
नई दिल्ली –110092
दूरभाष : 9999971714, 9999971716

आप अपना सहयोग सीधे बैंक में भी जमा करा सकते हैं, खाते की विस्तृत जानकारी निम्नानुसार है :

A/c Name : Param Shakti Peeth A/c Kanyadan
A/c No. : 6023000100098186
IFSC Code : PUNB0602300
Branch Name : Mandawali, Delhi

वात्सल्य प्रकाशन की प्रस्तुतियाँ...

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन विचारों से युक्त साहित्य परमशक्ति पीठ के 'वात्सल्य प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित किया जाता है, जो आपको जीवन की अनेक समस्याओं के सरल समाधान देता है। आप भी इन पुस्तकों को पढ़कर अपना जीवन सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर सकते हैं।

वात्सल्य साहित्य

01. आत्मसुख की ओर
02. सद्गुरु - बन्धनों के मुक्तिदाता
03. योग - सफल जीवन का रहस्य
04. सार्थक जीवन के सूत्र
05. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते
06. जीवन का परमानन्द
07. साधना के पथ पर
08. जागो भारत की नारी
09. सद्गुरु - जीवन की आवश्यकता
10. माँ - सृष्टि की धुरी
11. मुझे बचाओ माँ
12. परमशक्ति योग (हिन्दी)
13. परमशक्ति योग (अंग्रेजी)
14. यशोदा भाव - वात्सल्य ग्राम की मूल प्रेरणा
15. अनुभूति
16. पाथेय
17. व्यक्तित्व और विचार
18. मेरी स्मृतियों के भानु भैया
19. शुभाशीष
20. युगपुरुष की युगयात्रा
21. पिबत भागवतं रसमालयम्
22. नया सवेरा लाओ (काव्य संग्रह)
23. साधना के स्वर (भजन संग्रह)
24. भजन वर्षा (भजन संग्रह)
25. मेरी छोटी सी है नाव (भजन संग्रह)
26. वात्सल्य
27. श्रीमद्भगवद्गीता
28. निरामय प्राकृतिक चिकित्सा

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भराजी के बाल्यकाल और श्रीरामजन्मभूमि संघर्ष की रोचक गाथा

साध्वी ऋतम्भरा और श्रीरामजन्मभूमि आंदोलन

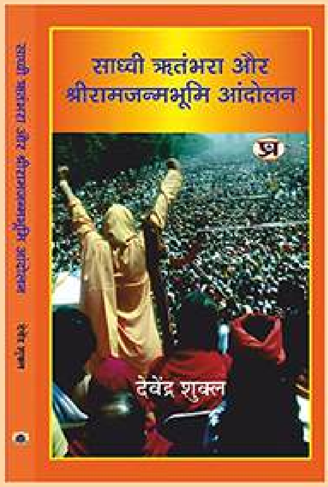

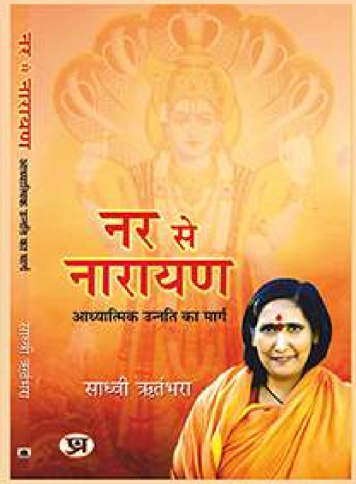

ये दोनों पुस्तकें www.prabhatbooks.com पर ऑनलाइन ऑर्डर करके घर बैठे मंगवाई जा सकती हैं

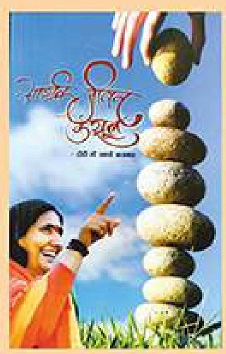

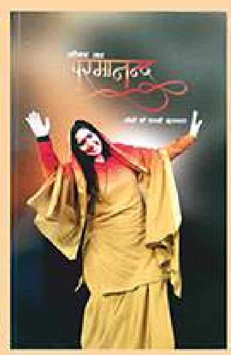

उपरोक्त साहित्य मंगवाने के लिए आप 'परमशक्ति पीठ' के निम्न पतों अथवा फोन नंबर्स पर सम्पर्क कर सकते हैं।

केन्द्रीय कार्यालय

परमशक्ति पीठ
लव-102, अग्रसेन आवास, 66 इन्द्रप्रस्थ विस्तार,
नई दिल्ली-110092
सम्पर्क फोन नं.-01122238751, 9958885858
ईमेल-info@vatsalyagram.org
वेबसाइट-www.vatsalyagram.org

शाखा कार्यालय

वात्सल्य ग्राम
मथुरा-वृन्दावन मार्ग,
पोस्ट-प्रेमनगर
वृन्दावन, जिला-मथुरा (उत्तरप्रदेश) पिन-281003
सम्पर्क फोन नंबर-9412777151

परमशक्ति पीठ के सेवा प्रकल्प

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन

के विभिन्न प्रकल्पों हेतु आपके आर्थिक सहयोग का स्वागत है

परमशक्ति पीठ में आपका सहयोग

आजीवन सहयोगी	1,00,000/-
संस्थापक सहयोगी	5,00,000/-
कार्पोरेट सहयोगी	11,00,000/-

वत्सल निधि में आपका सहयोग

शिक्षा निधि (वार्षिक)	6000/-
वत्सल निधि (एक सुविधा) वार्षिक	24,000/-
वत्सल निधि (शिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन, होस्टल, अन्य) वार्षिक	1,20,000/-
बच्चों का एक समय का भोजन	21,000/-

वैशिष्ट्यम् स्कूल (दिव्यांग बच्चों हेतु) में आपका सहयोग

दिव्यांग बच्चों की समुचित देखभाल हेतु (वार्षिक)	1,50,000/-

चिकित्सा सेवाओं में आपका सहयोग

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन के प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय में आयोजित होने वाले निःशुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविरों हेतु (एक रोगी के ऑपरेशन हेतु)	3000/-
ग्रामीण क्षेत्रों में आयोजित होने वाले निःशुल्क स्वास्थ्य शिविरों हेतु (प्रति शिविर)	51,000/-

श्री सर्वमंगला पीठम् में आपका सहयोग

संस्थापक सहयोगी	5,00,000/-
एक शिला सहयोगी	1100/-

गौ सेवा में आपका सहयोग

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन की 'कामधेनु गौगृह गौशाला' हेतु

प्रति गौमाता सहयोग (मासिक)	3100/-
प्रति गौमाता सहयोग (वार्षिक)	36,000/-
गौवंश हेतु भूसा सहयोग (दैनिक)	11,000/-
गौवंश हेतु हरा चारा सहयोग (दैनिक)	5100/-
गौ दान राशि	50,000/-

Param Shakti Peeth

Vatsalya Gram, Vrundavan

Your Donetion is welcome for our various service projects

Your Donation for Param Shakti Peeth

Life Member	1,00,000/-
Founder Member	5,00,000/-
Corporate Member	11,00,000/-

Your Donation for Vatsal Nidhi

Shiksha Nidhi (Annual)	6000/-
Vatsal Nidhi (For one facility) Annual	24,000/-
Vatsal Nidhi (Education, Health, Meal, Hostel etc.) Annual	1,20,000/-
One time meal for children	21,000/-

Your Donation for Vaishishtyam school

For proper care of disabled children (Annual)	1,50,000/-

Your Donation for Medical Services

•For cataract operation camps to be organized at Premvati Gupta Eye Hospital, Vatsalya Village] Vrindavan (For operation of one pataint)	3000/-
•For free health camps to be organized in rural areas	51,000/-

Your Donation for Shri Sarvmangla Peetham

Founder Member	5,00,000/-
One Brick donation	1100/-

Your Donation for Cow Shed

For Kamdhenu Gaugruh Gaushala of Vatsalya Gram

For One cow (Monthly)	3100/-
For One cow (Yearly)	36,000/-
Straw for cattle (Daily)	11,000/-
Green fodder cooperation for cattle (Daily)	5100/-
Cow donation fund	50,000/-

वात्सल्य ग्राम के साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद

परमशक्ति पीठ के सेवाकार्यों में आप अपना सहयोग इस प्रकार दे सकते हैं :

बैंक खातों में सीधे जमा करने के लिए जानकारियाँ

बैंक का नाम : पंजाब नेशनल बैंक
खाता क्रमांक : 1518000101014134
आई.एफ.एस.सी. कोड : PUNB0151800

बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इन्डिया
खाता क्रमांक : 10137296689
आई.एफ.एस.सी.कोड : SBIN0007085

दान के लिए ऑनलाइन लिंक :
https://www.vatsalyagram.org/donate

ऑनलाइन दान के लिए कृपया
इन क्यू.आर.कोड्स को स्केन करें

चेक अथवा डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भी दान राशि परमशक्ति पीठ कार्यालय में भेजी जा सकती है।

प्रधान कार्यालय का पता :

परमशक्ति पीठ

लव–102, अग्रसेन आवास,
66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, पटपड़गंज, नई दिल्ली –110092
सम्पर्क सूत्र : 011-22238751, 9999971714, 9999971716
ईमेल : donorcare@vatsalyagram.org वेबसाइट : www.vatsalyagram.org

आपका सहयोग आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

योगदान प्रपत्र

जी हाँ, मैं वात्सल्य ग्राम के सेवा प्रकल्पों में अपना योगदान देना चाहता हूँ / चाहती हूँ। मेरा व्यक्तिगत विवरण इस प्रकार है।

श्री/श्रीमती/कुमारी ____________________

व्यवसाय ____________

पता ____________________

____________ पिनकोड ________

सम्पर्क फोन नंबर ____________

ईमेल आई.डी. ____________________

दान राशि (अंकों में) ________ (शब्दों में) ____________

परमानेंट अकाउंट नंबर (PAN) ____________

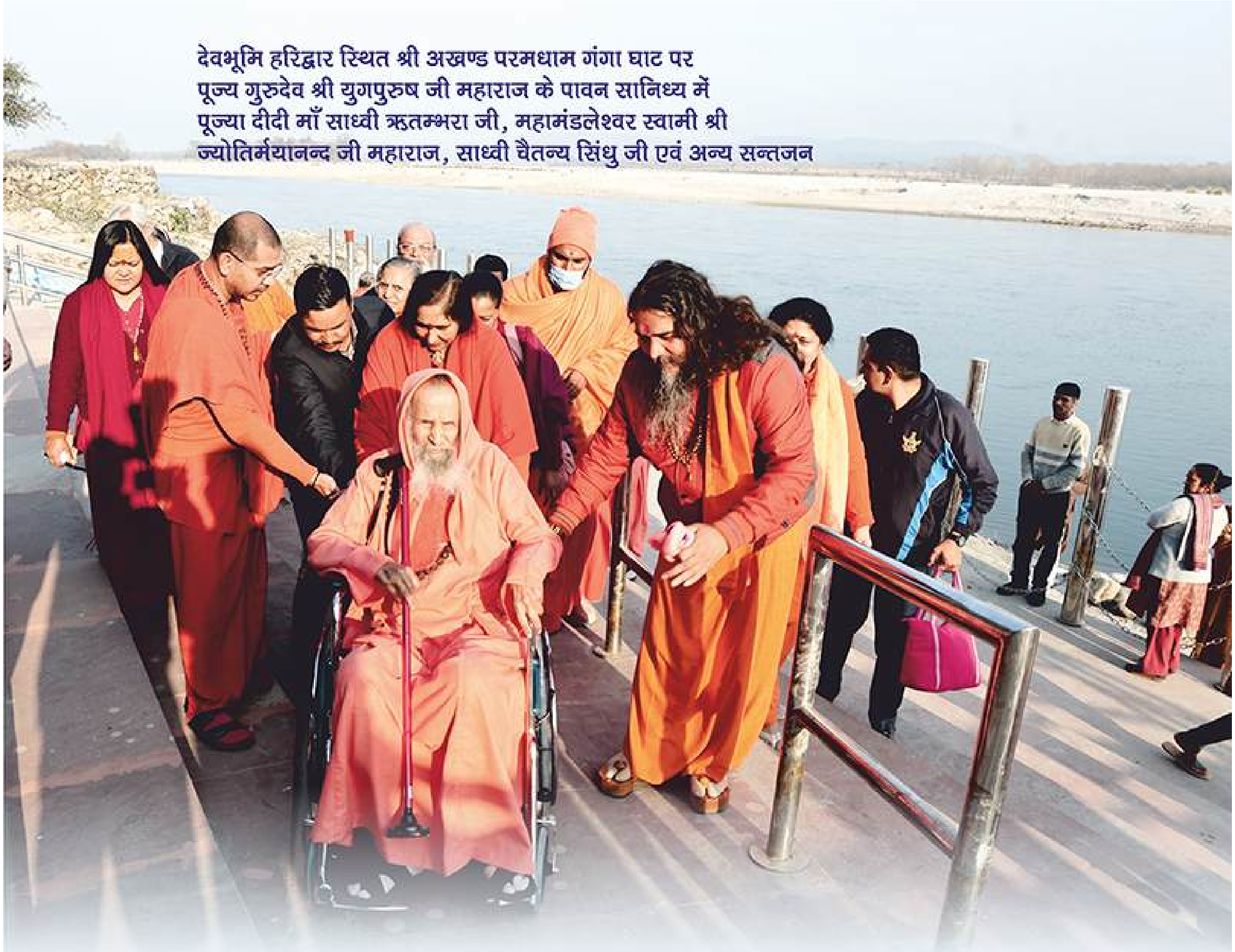

देवभूमि हरिद्वार स्थित श्री अखण्ड परमधाम गंगा घाट पर पूज्य गुरुदेव श्री युगपुरुष जी महाराज के पावन सानिध्य में पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी, महामंडलेश्वर स्वामी श्री ज्योतिर्मयानन्द जी महाराज, साध्वी चैतन्य सिंधु जी एवं अन्य सन्तजन

Donation Form

Yes, I want to contribute for Vatsalya Gram. My personal details are :

Mr./Mrs/Ms :...

Occupation :...

Address :...

....Pin Code.......................

Phone No. :...........................   Mobile No. :............................

email :...

Donation Amount (In digits) :.....................(In words).........................

....Permanent A/c No.......................................

Thanks for join hands with Vatsalya Gram

You can dontate your donation directly in following banks :

Bank name : Pujab National Bank	Bank name : State Bank Of India
A/c. No. : 1518000101014134	A/c. No. : 10137296689
IFSC Code : PUNB0151800	IFSC Code : SBIN0007085

Link for online donation : https://www.vatsalyagram.org/donate

Paytm Mobile Number of Donation : 88268 88001

ज्ञान की देवी माँ सरस्वती

-रमेश रंजन त्रिपाठी

अपने विचार और भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए स्वर, शब्द, हावभाव, भाषा या चित्र का सहारा लेते हुए मनुष्य को वाणी और बुद्धि की महत्ता समझ में आई होगी। तब उसने संगीत, कला, नृत्य, अभिनय आदि संप्रेषण के माध्यमों में परफेक्शन, प्रभाव एवं सफलता के लिए आवश्यक शक्ति पाने की आकांक्षा से देवी सरस्वती से प्रार्थना की होगी। सृष्टि के संचालन के लिए ऊर्जा एवं चेतना की स्रोत आदिशक्ति हैं, जो माता शारदा के रूप में बुद्धि, विवेक, ज्ञान, चेतना और समस्त ललित कलाओं की अधिष्ठात्री देवी हैं।

ऋतुओं के राजा बसंत में माघ महीने के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को माता सरस्वती का प्राकट्य हुआ। वे ब्रह्मा जी के मुख से उत्पन्न हुईं। वाग्देवी का अलौकिक स्वरूप निर्मलता, पवित्रता और श्रेष्ठता की सर्वोच्चता का प्रतीक है।

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा।।

अर्थात् जो कुन्द के फूल, चन्द्रमा, हिमराशि और मोतियों के हार के समान उज्ज्वल वर्ण की हैं, जो श्वेत वस्त्रों से ढँकी हुई हैं, जिनके हाथ वीणा के सुन्दर दण्ड से सुशोभित हैं, जो श्वेत कमल पर विराजमान हैं, और जिनकी ब्रह्मा, विष्णु और शंकर जैसे देवताओं द्वारा सदा वंदना की जाती है, वही भगवती सरस्वती हमारी समस्त जड़ता और अज्ञानता को दूर करें और हमारी रक्षा करें।

अज्ञान रूपी तमस सरस्वती जी के आसपास भी नहीं फटक सकता। उनका वाहन हंस है जो नीर क्षीर विवेक का प्रतीक है। उनका विग्रह श्वेत अर्थात् उज्ज्वल, निर्मल, शीतल, पावनता का मूर्तिमान स्वरूप है। उनके हाथों में वीणा संगीत, साहित्य और कला के आश्रय को दर्शाती है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'श्री रामचरितमानस' में बुद्धि, विवेक और वाणी को प्रभावित करने के लिए देवी सरस्वती की कृपा का वर्णन किया है। रावण, कुंभकर्ण और विभीषण की तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा जी उन्हें वरदान देने आते हैं, तब कुंभकर्ण के भयंकर विशाल आकार को देखकर चिंतित हो उठते हैं कि यह राक्षस प्रतिदिन भोजन करेगा तो पूरे संसार को शीघ्र ही समाप्त कर देगा। विधाता के आग्रह पर सरस्वती जी कुंभकर्ण की जिह्वा पर विराजमान हो जाती हैं और वह अपने लिए छह महीने की नींद और एक दिन की जाग्रत अवस्था मांग लेता है। दुनिया निशाचर का ग्रास बनने से बच जाती है। दूसरा अवसर आता है जब अयोध्या नरेश दशरथ श्रीराम के राज्याभिषेक की तैयारी करते हैं। देवताओं को चिंता होती है कि श्रीराम के राजा बन जाने पर रावण का वध कैसे होगा, क्योंकि दशानन की मृत्यु वानरों की सहायता से नर के हाथों होनी थी। रावण का अंत करने के लिए श्रीराम का वन में जाना आवश्यक था। तब देवतागण माता शारदा से सहायता की याचना करते हैं। देवताओं का काम संवारने तथा पृथ्वी को राक्षसों के अत्याचार से मुक्ति दिलाने जैसे परोपकार के लिए वाग्देवी महाराज दशरथ की प्रिय पत्नी महारानी कैकेयी की दासी मंथरा की बुद्धि भ्रष्ट कर देती हैं। मंथरा अपनी स्वामिनी महारानी कैकेयी को उनके पुत्र भरत के लिए अयोध्या का राज्य और श्रीराम के वनवास का वरदान माँगने के लिए तैयार कर लेती है। हमारा पौराणिक इतिहास इस बात का प्रमाण है कि कैकेयी द्वारा मांगे गए वरदान ही रावण के अंत का कारण बनें। इन दोनों अवसरों पर माता सरस्वती सहायता करती हैं परन्तु श्रीराम को वनवास से वापस लौटाने के लिए भरत जब चित्रकूट जाते हैं तब वे भरत की मति फेरने के देवताओं के निवेदन को ठुकरा देती हैं।

माँ शारदा ज्ञान, बुद्धि, विवेक और वाणी की देवी हैं। वे लोक कल्याण के लिए तत्पर रहती हैं लेकिन अनैतिक एवं अनर्थ में साथ नहीं देतीं। देवी सरस्वती की कृपा से चेतना, प्रज्ञा और ज्ञान का उच्चतम शिखर प्राप्त होता है। उनकी आराधना से भक्तों का सदैव कल्याण होता है।

महिलाओं के लिए बिजनेस लोन

बिजनेस करने के मामले में अब महिलाएँ भी पीछे नहीं हैं। पहले महिलाओं को बिजनेस शुरू करने से डर लगता था लेकिन अब बदलते समय के अनुसार बिजनेस में महिलाओं की हिस्सेदारी लगातार बढ़ रही हैं। गूगल बेन रिपोर्ट की अनुसार भारत में बीस प्रतिशत स्टार्टअप्स की मालकिन महिलाएँ हैं। सरकार भी अब व्यवसाय में महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दे रही है, जिसके कारण उसने सरकारी और निजी बैंकों के साथ मिलकर बिजनेस शुरू करने वाली महिलाओं को लोन देने की योजनाओं की शुरुआत की है। जिनकी मदद से कोई भी महिला लोन लेकर अपना बिजनेस शुरू कर सकती हैं। इस लेख में हम आपको महिलाओं के लिए टॉप 5 बिजनेस लोन योजनाओं के बारे में बता रहे हैं।

मुद्रा लोन योजना

मुद्रा लोन योजना को प्रधानमंत्री लोन योजना के तहत वर्ष 2015 में शुरू किया गया था, जिसकी मदद से कोई भी व्यक्ति या महिला अपना खुद का बिजनेस शुरू करने के लिए लोन ले सकते हैं। मुद्रा लोन योजना की द्वारा लाभार्थियों को बिजनेस शुरू करने के लिए दस लाख रुपये तक का लोन मिल सकता हैं। इस योजना में लोन राशि को तीन अलग अलग कैटेगरी में बाँटा गया गया है - शिशु, किशोर और तरुण।

शिशु कैटेगरी में 50 हजार रु.तक, किशोर कैटेगरी में 5 लाख रुपये तक जबकि तरुण कैटेगरी में 20 लाख रुपये तक का लोन दिया जाता है। इन्हें आप मुद्रा लोन योजना से जुड़े हुए किसी भी सरकारी या निजी बैंकों से ले सकते हैं।

बैंक ऑफ बड़ौदा की 'शक्ति योजना'

सरकारी क्षेत्र के तीसरे नंबर के सबसे बड़े बैंक बैंक ऑफ बड़ौदा ने महिलाओं के लिए एक विशेष प्रकार का खाता खोलने की प्रक्रिया शुरू की है। बैंकों ने इस खाते को 'बैंक ऑफ बड़ौदा महिला शक्ति सेविंग अकाउंट' का नाम दिया है। इसके तहत अकाउंट होल्डर महिला को बैंक द्वारा 'प्लेटिनम कार्ड' दिया जाता है जिसके माध्यम से वो दो लाख रुपये तक का पर्सनल इंश्योरेंस दिया जाता हैं। इस खाते के द्वारा महिलाओं को दोपहिया वाहन और एज्युकेशन लाने मिलता है।

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया की 'सेंट कल्याणी योजना'

सेंट कल्याणी योजना की मदद से महिलाएँ खुद का बिजनेस शुरू कर सकती हैं। इसके अन्तर्गत सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया महिलाओं को सस्ती दरों पर लोन उपलब्ध करवाता है। मैन्युफैक्चरिंग या सर्विस बिजनेस शुरू करने के लिए अथवा पुराने बिजनेस को बढ़ाने के लिए महिलाएँ एक करोड़ रुपये तक का लोन ले सकती हैं। अगर कोई महिला अपना नया बिजनेस शुरू करना चाहती हैं तो उन्हें सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के द्वारा लोन की डीएचएस योजना का लाभ दिया जाता है।

श्रृंगार और अन्नपूर्णा लोन योजनाएं

श्रृंगार लोन उन महिलाओं को दिया जाता हैं जो महिला खुद का ब्यूटी पार्लर शुरू करना चाहती हैं जबकि अन्नपूर्णा योजना के तहत उन महिलाओं को बिजनेस लोन दिया जाता हैं जो फूड कैटरिंग का बिजनेस शुरू करना चाहती हैं। योजना के तहत लोन लेने वाली आवेदक महिलाओं की आयु न्यूनतम 20 वर्ष और अधिकतम 60 वर्ष है। इस लोन को चुकाने की अवधि 3 से 7 वर्ष है।

केनरा बैंक की सिंड महिला शक्ति योजना

सिंडिकेट बैंक ने महिला उद्यमियों को बढ़ावा देने के लिए 'सिंड महिला शक्ति स्कीम' की शुरुआत की थी। सिंडिकेट बैंक का अब केनरा बैंक में विलय हो चुका हैं। जिसके कारण अब इस स्कीम को केनरा बैंक हैंडल कर रहा है। इस स्कीम के तहत महिलाएँ अपना बिजनेस शुरू करने के लिए 5 से 10 लाख रुपयों तक का लोन ले सकती हैं।

पी.एन.बी. की महिला उद्यम निधि योजना

इस योजना के तहत महिलाएँ खुद का बिजनेस शुरू करने के लिए पंजाब नेशनल बैंक से दस लाख रुपये तक का लोन ले सकती हैं। इस लोन के लिए भी किसी गारंटर की जरूरत नहीं होती। इसे चुकाने की अवधि 5 से 10 वर्ष तक की है।

इन व्यवसायों के लिए महिलाओं को लोन मिलता है

ब्यूटी पार्लर, सैलून, सिलाई, कृषि और कृषि उपकरणों की सेवा, कैंटीन और रेस्टोरेंट, नर्सरी, लॉन्ड्री और ड्राई क्लीनिंग, डे केयर सेंटर, कम्प्यूटराइज्ड डेस्कटॉप पब्लिशिंग, केबल टीवी नेटवर्क, फोटोकॉपी सेंटर, सड़क परिवहन ऑपरेटर, प्रशिक्षण संस्थान, वॉशिंग मशीन और अन्य इलेक्टॉनिक्स, इलेक्ट्रिकल गैजेट्स रिपेयरिंग, जैम, जेली व मुरब्बा उत्पादन इत्यादि।

हमारे तीर्थ

मंगलनाथ मन्दिर

(उज्जैन, मध्यप्रदेश)

उज्जैन स्थित भगवान मंगलनाथ मंदिर में की गई मंगल की पूजा का विशेष महत्व होता है। मान्यता है कि यहाँ पूजा अर्चना करने वाले हर जातक की कुंडली के दोषों का नाश हो जाता है। ऐसे व्यक्ति जिनकी कुंडली में मंगल भारी रहता है, वो अपने अनिष्ट ग्रहों की शांति के लिए मंगलनाथ मंदिर में पूजा-पाठ करवाने आते हैं। मान्यतानुसार अंधकासुर नामक दैत्य को शिवजी ने वरदान दिया था कि उसके रक्त से सैकड़ों दैत्य जन्म लेंगे। वरदान के बाद इस दैत्य ने अवंतिका (उज्जैन) में एक बार भारी विनाश किया। तब उसके अत्याचार से पीड़ित निवासियों ने भगवान श्री शिवशंकर से प्रार्थना की। भक्तों के संकट दूर करने के लिए स्वयं उन्होंने अंधकासुर से युद्ध किया। दोनों के बीच भीषण युद्ध हुआ। इस संघर्ष में शिवजी का पसीना बहने लगा। फलस्वरूप उसकी गर्मी से उज्जैन की धरती फटकर दो भागों में विभक्त हो गई और मंगल ग्रह का जन्म हुआ। शिवजी ने दैत्य का संहार किया और उसकी रक्त की बूंदों को उत्पन्न हुए मंगल ग्रह के भीतर समेट दिया। कहा जाता है कि इसीलिए मंगल की धरती लाल रंग की है।

पात्र अपात्र

लघुकथा

- रमेश रंजन त्रिपाठी

सुशील ने असहाय लग रहे बुजुर्ग को सड़क पार करने में सहायता कर दी। दुसरे छोर पर पहुँचते ही एक युवक आ धमका। उसने बुजुर्ग का हाथ थामा और उनके कमीज की जेब टटोलते हुए सुशील पर चिल्लाया -'तुमने मेरे बाबा की जेब में रखे सौ रुपए निकाल लिए हैं, वापस करो।'

सुशील हक्का-बक्का रह गया, बोला- 'क्या कहते हो भाई! मैं तो इनकी मदद कर रहा था। मैं चोर नहीं हूँ।'

'तो जो सौ रुपए मैंने इनकी जेब में रखे थे, कहाँ गए?' युवक ने ऊँची आवाज में सुशील को भला-बुरा कहना शुरू कर दिया। लोग इकट्ठा हो गए। कोई बोला कि सुशील की तलाशी लो और पैसे वापस दिला दो। उत्साही भीड़ सुशील को पकड़कर तलाशी लेने लगी। उसकी जेब में दस का एक मुड़ा-तुड़ा नोट मिला। युवक के झूठ की पोल खुल चुकी थी। अब भीड़ युवक की ओर मुड़ी। लगा कि लोग उसे पीटेंगे, तभी सुशील ने सबको रोक दिया और बोला -'मेरी तरह यह भी गरीब है, लेकिन पैसों के लिए बेईमानी ठीक नहीं। यदि यह नौजवान भविष्य में किसी को न ठगने का वादा करे, तो माफ कर दें।' युवक ने वादा किया और बुजुर्ग के साथ चला गया।

सुशील कुछ दूर गया था कि एक भद्र पुरुष से भेंट हो गई। दोनों बातचीत करने लगे। भद्र ने कहा -'मैंने अभी की घटना देखी है। तुम सज्जन और ईमानदार हो। काम की तलाश कर रहे हो। मैं तुम्हारी सहायता करना चाहता हूँ।'

सुशील खुश हो गया। भद्र बोला -'मेरे आलीशान मकान में सोने-चाँदी के बेईमान घड़ों की भरमार है। धीरे-धीरे वे साधारण मिट्टी के ईमानदार पात्रों को निगलते जा रहे हैं। तुम्हें ईमानदारी के बचे हुए पात्र की देखभाल करने का काम दे सकता हूं। इसके बदले में तुम्हारा साधारण तरीके से जीवन यापन होने लगेगा।' सुशील ने कहा -'मैं तैयार हूँ।'

'यह पात्र यूँ तो खाली होगा लेकिन हर रोज तुम्हारे गुजारे लायक धन इसमें मिल जाया करेगा।' भद्र ने समझाया- 'एक शर्त भी जुड़ी है कि बेईमान घड़े वाले महल में तुम्हें ईमानदारी की पात्रता को हरदम अपनी गोद या हाथों में सहेजकर रखना होगा। पात्र को खुद से अलग करते ही वह तुमसे दूर हो जाएगा और तुम्हारा काम भी छिन जाएगा।'

सज्जन सुशील को उसका मनपसंद काम मिल रहा था, वह तुरंत मान गया। बेईमानी के भवन में वह ईमानदारी की पात्रता को बड़े चाव से सहेजने लगा। उसे बहुत अच्छा लग रहा था। फिर, लगातार पात्र को थामे रहने से उसके हाथों में दर्द होने लगा। गोद में रखना भारी हो चला। पीड़ा और बेचैनी धीरे-धीरे बढ़ने लगी। दिन, हफ्ते बीतते-बीतते परेशानी ने बड़ा रूप धारण कर लिया। महीनों में यह बेचैनी असह्य हो गई। बर्दाश्त से बाहर होने पर सुशील ने अपने पात्र को छोड़ा और हीरे-जवाहरात से भरा सोने का घड़ा उठाकर घर आ गया।

चोरी और कपट से मिले घड़े के धन को सुशील गिनने लगा। गहने-सिक्के खाली करते ही घड़े में अड्डा बनाकर छिपा हुआ नाग बाहर आ गया। जब तक सुशील संभलता, नाग उसे डँस चुका था।

एम्बुलेंस में अस्पताल जाते हुए अर्धमूर्छित सुशील ने भद्र पुरुष को चौराहे पर खड़ा देखा, जो शायद फिर किसी सुशील की तलाश कर रहा था।

60 वाँ नि:शुल्क मोतियाबिंद ऑपरेशन शिविर सम्पन्न

वृन्दावन

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन स्थित 'प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय' में 17 जनवरी से आयोजित दो दिवसीय 'नि:शुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविर' का समापन 18 जनवरी को सम्पन्न हुआ। दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी की पावन प्रेरणा से यहाँ पच्चीस वर्षों से आयोजित होते आ रहे इन शिविरों के आधार स्तंभ मुम्बई के प्रख्यात नेत्र रोग विशेषज्ञ एवं सर्जन डॉ. श्याम अग्रवाल की उल्लेखनीय सेवाओं के लिए उन्हें 'अखिल भारतीय वात्सल्य रत्न' एवं 'ब्रज रत्न' सम्मानों से विभूषित किया गया। उल्लेखनीय है कि अब तक आयोजित हो चुके ऐसे 60 मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविरों के माध्यम से हजारों नेत्र रोगियों को नूतन नेत्र ज्योति प्राप्त हो चुकी है। डॉ.श्याम अग्रवाल के मार्गदर्शन में मुम्बई के प्रसिद्ध नेत्ररोग विशेषज्ञ एवं सर्जन डॉ. विशाल राठौर, डॉ.अनुज वहुवा, डॉ.राहुल जैन, डॉ. जुगल शाह, डॉ.मयूर अग्रवाल, डॉ.आरती अग्रवाल वहुवा, डॉ. आनंद जयपुरिया, डॉ.सौरभ रामुका एवं डॉ.विशाल उप्पल सहित उनकी पैरामेडिकल टीम ने इस शिविर के मात्र एक दिन में 302 रोगियों के ऑपरेशन सफलतापूर्वक सम्पन्न किये। इस शिविर के प्रायोजक रहे श्री गजानन्द गुप्ता चैरिटेबल ट्रस्ट एवं लायंस क्लब ऑफ मिलेनियम।

मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविर के समापन समारोह का शुभारंभ पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी एवं मुख्य अतिथि श्री आलोक कुमार (अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष-विश्व हिन्दू परिषद) के कर-कमलों से दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। आयोजन के प्रारंभ में मंचस्थ विशिष्ट अतिथियों एवं डॉक्टर्स का स्वागत सत्कार किया गया। दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी एवं श्री आलोक कुमार जी द्वारा डॉ.श्याम अग्रवाल को 'अखिल भारतीय वात्सल्य रत्न' से सम्मानित किया गया। साध्वी शिरोमणि जी ने डॉ.श्याम जी को भेंट किये जाने वाले अभिनंदन पत्र का वाचन किया। ब्रज क्षेत्र की अनेक सामाजिक संस्थाओं द्वारा भी उनका अभिनंदन किया गया।

इस अवसर पर प्रमुख रूप से आचार्य श्री मृदुलकांत जी शास्त्री, श्री संजय भैयाजी, श्री जयकुमार गुप्ता, महंत श्री मोहिनीशरण जी महाराज, डॉ.मनोज मोहन शास्त्री जी महाराज, श्री आनंद वल्लभ गोस्वामी जी महाराज, स्वामी श्री देवानंद जी महाराज, साध्वी चैतन्य सिंधु जी, श्री मुकेश खांडेकर, श्री अनिल मिश्रा, श्री सतीश कुमार गुप्ता, श्री आनंद अग्रवाल, श्री जयभगवान अग्रवाल, श्री महेश खंडेलवाल, श्री रविकांत गर्ग, श्री राजेश अग्रवाल, श्रीमती श्वेता अग्रवाल, श्री माधवप्रसाद अग्रवाल, डॉ.प्रेम अग्रवाल, सुश्री मीनाक्षी अग्रवाल तथा सुश्री सुमनलता जी सहित अनेक गणमान्यजन आयोजन में सम्मिलित हुए। मंच संचालन किया डॉ.उमाशंकर 'राही' ने। कार्यक्रम के अन्त में लाभार्थी शिविरार्थियों को नि:शुल्क दवाई एवं चश्मे का वितरण किया गया।

रोगी रजिस्ट्रेशन

प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय का ऑपरेशन थियेटर

ऑपरेशन थियेटर में पूज्या दीदी माँ जी

ऑपरेशन पश्चात रोगियों से मिलते हुए

'वात्सल्य रत्न' डॉ.श्याम अग्रवाल का अभिनन्दन करके हम अभीभूत हैं

– दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

आज हम सब लोग डॉ. श्याम अग्रवाल जी को 'अखिल भारतीय वात्सल्य रत्न' सम्मान से विभूषित करते हुए धन्यता के बोध से परिपूत हैं, बहुत अभिभूत हैं, आनंदित हैं और प्रसन्न हैं। हम अपने रोम रोम में कृतज्ञता का अनुभव कर रहे हैं। मुझे बार-बार लगता था कि ब्रजवासियों की डॉ.श्याम जी इतनी सेवा कर रहे हैं तो हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता तो व्यक्त करें। जब सम्मान पाना हो तो श्याम जी की तरह निरपेक्ष बने रहना चाहिए लेकिन जब सम्मान देना हो तो हम सब ब्रजवासियों की तरह उत्साह से भरे रहना चाहिए। जीवन का सूत्र है कि जब किसी का सत्कार करना हो तो उसके लिए उमंग चाहिए। जब लेने चलो तब संतोष चाहिए और जब मांगने चलो तो संकोच करना चाहिए। हम सब लोग भाग्यशाली हैं वात्सल्य ग्राम की भूमि जो कि ब्रज की भूमि है यह भगवान श्रीकृष्ण की लीला भूमि है, यह सौभाग्य से भरी हुई है। सौभाग्य संपत्तियों से नहीं आता बंधु भगिनियों, वह साधना से आता है। साधकों का जब समूह मिल जाता है तब आता है। यहां डॉ. श्याम अग्रवाल जी ने ब्रजवासियों की सेवा में अस्पताल खड़ा किया। लाखों रुपयों की मशीनें यहां आ गईं। यहां आयोजित होने वाले शिविरों के प्रायोजक निश्चित रहते हैं। कई बार तो श्यामजी से लोग लड़ाई करते हैं कि इस बार का शिविर तो हमारी तरफ से होना था। पंक्तियों की पंक्तियां रहती हैं उनके पीछे अर्पण करने वालों की। इसीलिए मैं कहती हूं उनका व्यक्तित्व चुंबकीय आकर्षण रखता है क्योंकि सब उनके हृदय की निष्कामता को जानते हैं और जहां हृदय की निष्कामता होती है वहां चारों दिशाओं से रिद्धि सिद्धि पीछे चलने लगती हैं। आज हम आपका अभिनंदन करके अभिभूत हैं।

अखिल भारतीय वात्सल्य रत्न - डॉ.श्याम अग्रवाल

मुम्बई निवासी ख्यातनाम नेत्र चिकित्सक, परमशक्ति पीठ के परम सहयोगी एवं वरिष्ठ समाजसेवी डॉ.श्याम अग्रवाल को 'अखिल भारतीय वात्सल्य रत्न' अलंकरण से विभूषित करते हुए पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी, विश्व हिन्दू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आलोक कुमार जी, वृन्दावन के पूज्य सन्तजन तथा अन्य गणमान्यजन।

अखिल भारतीय वात्सल्य रत्न
डॉ.श्याम जी अग्रवाल की उपलब्धियाँ और उनके सेवाकार्य एक दृष्टि में...

जन्म, बाल्यकाल एवं प्रारंभिक शिक्षा

वर्तमान भारत के नेत्र चिकित्सा जगत में एक दैदिप्यमान नक्षत्र की भाँति रुग्ण आँखों को नित-नूतन ज्योति प्रदान कर रहे डॉ.श्याम अग्रवाल का जन्म 12 जनवरी 1955 को उत्तरप्रदेश के साईपुर नामक छोटे से गाँव में पिता श्री चन्द्रभान गुप्ता अग्रवाल एवं माता श्रीमती संजीवनी अग्रवाल के घर हुआ था। उत्तर प्रदेश के एक सरकारी सहायता प्राप्त स्कूल में तीसरी कक्षा तक उनकी शिक्षा हुई। इसके बाद वे तत्कालीन बम्बई चले गए जहाँ सरकारी सहायता प्राप्त बी. एल. रुइया स्कूल में कक्षा दसवीं तक उनकी शिक्षा पूर्ण हुई। बम्बई के पार्ले जूनियर कॉलेज में उनकी उच्च शिक्षा हुई। कॉलेज की फीस भरने के लिए वे स्कूली छात्रों को पढ़ाया करते थे।

उच्च शिक्षा

मुंबई के किंग एडवर्ड मेडिकल कॉलेज (के.ई.एम.) में एम.बी.बी.एस. शिक्षा के दौरान उन्होंने विभिन्न विषयों में कई स्वर्ण पदक और वर्ष 1976 में 'बेस्ट इंटर्न' पुरस्कार प्राप्त किया। उन्हें अपने चिकित्सा प्रशिक्षण के दौरान 'राष्ट्रीय छात्रवृत्ति' भी प्रदान की गई। उन्होंने किंग एडवर्ड मेडिकल कॉलेज, मुंबई से नेत्र विज्ञान में वर्ष 1971-1979 में एम.एस. और डी.ओ.एम.एस. की उपाधि प्राप्त की । चूँकि उनके पिता श्री चन्द्रभान जी विश्व हिन्दू परिषद-चित्तौड़ प्रान्त, राजस्थान के अध्यक्ष रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान करते थे, अतः राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एवं समाज सेवा के प्रति उनकी जुड़ाव प्रारंभ से ही रहा। इसी के वशीभूत अपनी एम.एस. शिक्षा के दौरान उन्होंने मुंबई के गोरेगांव स्थित गीताभवन में आर्थिक अभाव से ग्रस्त लोगों के लिए हर रविवार को मुफ्त नेत्र जाँच शिविर आयोजित किए। आपका विवाह श्रीमती इन्दु गोयल के साथ हुआ, जो एक आदर्श गृहणी हैं। पुत्र श्री धवल अग्रवाल डी.एम.एल.टी.-पैथोलॉजिस्ट हैं और पुत्री डॉ.आरती अग्रवाल एम.एस.-नेत्र रोग विशेषज्ञ होकर अग्रवाल आई हॉस्पिटल तथा संजीवनी लेसिक सेंटर में चिकित्सा निदेशक हैं।

नेत्र चिकित्सा संस्थान की स्थापना

वर्ष 1983 में आपने बम्बई के मलाड में 'अग्रवाल आई हॉस्पिटल' की स्थापना और संचालन प्रारंभ किया। बीतते समय के साथ केवल 400 वर्गफुट के क्लिनिक रूप में शुरू होकर यह 3000 वर्गफुट के 'सुपर स्पेश्यलिटी आई हॉस्पिटल' के रूप में विकसित हुआ। आज यहाँ प्रतिवर्ष 1500-2000 मोतियाबिंद ऑपरेशन्स तथा 800 से अधिक अन्यान्य प्रकार की नेत्र शल्य चिकित्सा की जाती है। इनमें 500 से अधिक सर्जरी उन लोगों के लिए निःशुल्क होती हैं जो इसका खर्च वहन नहीं कर सकते। डॉ.श्याम अग्रवाल अपने करियर में अब तक एक लाख से अधिक आई सर्जरी कर चुके हैं।

सामाजिक क्षेत्र में विशिष्ट भूमिका

- विगत पच्चीस वर्षों से पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन मार्गदर्शन में संचालित वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन के निःशुल्क मोतियाबिंद ऑपरेशन शिविरों में मुम्बई के अपनी साथी डॉक्टर्स और पैरामेडिकल टीम के साथ अभावग्रस्त रोगियों के निःशुल्क ऑपरेशन करते हैं। इन शिविरों के प्रायोजक भी वे स्वयं ही साथ लाते हैं। अब तक यहाँ ऐसे साठ शिविरों में पच्चीस हजार से भी अधिक मोतियाबिंद रोगियों के सफल ऑपरेशन हो चुके हैं।
- डॉ.श्याम जी 'हैफकिन इंस्टीट्यूट' (मुंबई) के बीस वर्षों तक अध्यक्ष भी रहे। उनके कार्यकाल में वहाँ पहली बार बिच्छू के जहर के रोधी टीके का निर्माण किया गया और इसे भारतीय जनता को निःशुल्क उपलब्ध कराया गया। उनके मार्गदर्शन में पोलियो वैक्सीन निर्माण इकाई भी स्थापित की गई।
- भारतीय जनता पार्टी, महाराष्ट्र के डॉक्टर प्रकोष्ठ के पूर्व अध्यक्ष
- मलाड मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष, मुंबई विश्वविद्यालय की खेल परिषद के सदस्य, मलाड मेडिकल एसोसिएशन, बॉम्बे ऑप्थेल्मिक एसोसिएशन और ऑल इंडिया ऑप्थेल्मिक एसोसिएशन के सदस्य रूप में आपकी सेवाएँ उल्लेखनीय हैं।
- सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में भारत विकास परिषद के अध्यक्ष, हरि सत्संग समिति के अध्यक्ष, अग्रबंधु सेवा समिति के सदस्य तथा श्रीराम लीला प्रचार समिति के न्यासी रूप में आपने अपनी सेवाएँ प्रदान कीं।

पुरस्कार एवं सम्मान

डॉ.श्याम अग्रवाल को उनकी उल्लेखनीय चिकित्सा और सामाजिक सेवा हेतु विभिन्न संगठनों एवं संस्थाओं द्वारा प्रतिष्ठित पुरस्कार एवं सम्मान प्रदान किये गए हैं :

- जेसीज इंटरनेशनल क्लब द्वारा वर्ष 1996 का 'उत्कृष्ट युवा व्यक्ति पुरस्कार'
- नेत्र विज्ञान में उत्कृष्टता के लिए वर्ष 1999 का 'दुर्गादेवी सर्राफ पुरस्कार'
- चिकित्सा और सामाजिक सेवा में योगदान के लिए वर्ष 2000 का 'रामलीला प्रचार समिति पुरस्कार'
- विभिन्न शिविरों में मुफ्त नेत्र शल्य चिकित्सा प्रदान करने के लिए वर्ष 2001 को 'हरियाणा सम्मेलन पुरस्कार'
- निःशुल्क नेत्र शिविरों के आयोजन और सामाजिक सेवाओं के लिए भारत विकास परिषद और विश्व हिंदू परिषद द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार।
- देशभक्तिपूर्ण सेवा के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा वर्ष

2005 का 'लक्ष्मण सिंह शेखावत पुरस्कार'

- हैफकिन बी.पी.सी.एल. में लगातार पाँच वर्षों तक लाभांश देने के लिए महाराष्ट्र सरकार द्वारा पुरस्कृत
- ठहाका पुरस्कार अवॉर्डी
- रामलीला प्रचार समिति द्वारा वर्ष 2023 का 'लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड'
- परमशक्ति पीठ द्वारा 'अखिल भारतीय वात्सल्य रत्न' अलंकरण

शैक्षणिक संस्थाओं के माध्यम से योगदान

- मलाड़, मुम्बई स्थित डी.जी. खेतान इंटरनेशनल स्कूल, गडटीज जूनियर कॉलेज और जे. कुमार इंटरनेशनल प्री-प्राइमरी स्कूल की स्थापना में डॉ.श्यामजी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 'नव चेतना चैरिटेबल ट्रस्ट' के अंतर्गत स्थापित ये सभी स्कूल विद्यार्थियों को विश्वस्तरीय शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से संचालित हैं।
- आप राम रत्ना विद्या मंदिर के संस्थापक सदस्य हैं जो भारतीय दर्शन को आधुनिक शिक्षा के साथ जोड़ते हुए भारतीय परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत पर जोर देता है। यह 200 एकड़ क्षेत्र में विस्तारित एक आवासीय विद्यालय है जिसमें गौशाला, आयुर्वेदिक केंद्र और वृद्धों के लिए घर भी शामिल हैं। राम रत्ना विद्या मंदिर की सफलता के बाद, उत्तान और आसपास के छात्रों को किफायती, उच्च गुणवत्ता वाली अंतरराष्ट्रीय शिक्षा प्रदान करने के लिए राम रत्ना इंटरनेशनल स्कूल की स्थापना की गई।
- वर्ष 2018 में संजीवनी वर्ल्ड स्कूल की स्थापना करके उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अपना योगदान और भी बढ़ाया। यहाँ शैक्षणिक एवं खेल गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जाता है ताकि भविष्य के नेता, एथलीट और कलाकार तैयार हो सकें।
- हिसार, हरियाणा के 200 एकड़ क्षेत्र में स्थित महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज और हॉस्पिटल जो कि अग्रोहा विकास ट्रस्ट संचालित है, उसके संचालन में भी डॉ.श्याम जी सक्रिय रूप से शामिल हैं, जो आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों को स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करता है।

विरासत और प्रभाव

डॉ.श्याम अग्रवाल की विरासत में 'मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है' के उनके विश्वास की झलक मिलती है। स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और सामुदायिक सेवा के प्रति उनके अथक समर्पण ने अमिट छाप छोड़ी है। निःशुल्क चिकित्सा सेवा, शैक्षणिक संस्थानों और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से उन्होंने समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के प्रयत्न किये हैं। वे निःस्वार्थ सेवा और करुणामयी व्यक्तित्व के अनुपम उदाहरण हैं। वे मनसा-वाचा-कर्मणा के सुन्दर युग्म होकर देश के लाखों लोगों की प्रेरणा हैं।

व्यवसाय बन चुकी चिकित्सा व्यवस्था के बीच डॉ.श्याम जी मानव सेवा के यज्ञ में रत हैं

- आलोक कुमार
(अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष-विश्व हिन्दू परिषद)

आज बहुत आनंद का दिन है। मैं अभी जब श्याम जी का स्वागत देख रहा था तो मुझे रामायण का वह प्रसंग याद आ रहा था कि रामजी को सूचना दी गई कि राजतिलक होगा, उन्होंने सहज में सुना। गुरु और दरबार का आदेश था इसलिए स्वीकार किया। परन्तु वाल्मीकि जी और तुलसीदास जी दोनों कहते हैं कि प्रभु श्रीराम के चेहरे की भंगिमा में कुछ अंतर नहीं आया। मुझे अयोध्या का राज्य मिल रहा है, यह सोचकर किसी विशेष आनंद का उछाल उन्होंने अनुभव नहीं किया। कर्तव्य पथ पर यह काम आया है, इतना भर स्वीकार किया। इसी के तुरन्त बाद जब उन्हें वनवास का आदेश हुआ तो भी उनके चेहरे पर कुछ अकुलाहट नहीं आई। वह कर्तव्य बताया गया था कि राज करना है और यह भी कर्तव्य है कि वन में जाना है। दोनों एक से हैं। सुख में, दुख में, अनुकूल में, प्रतिकूल में, जय में, पराजय में, यश में या अपयश में भी जिनके चेहरे की मंजुल भंगिमा एक सी रही, ऐसा उनका वर्णन है। मुझे नहीं पता कि अभी डॉ. श्यामजी को यह भान भी हो रहा था कि हम उनका स्वागत अभिनंदन कर रहे हैं। वह तटस्थ, निरपेक्ष और सहज भाव से विराजमान थे। मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि आज जबकि चिकित्सा का क्षेत्र व्यावसायिक बन गया है, तब डॉ.श्यामजी जाने कितने अभावग्रस्त लोगों का निःशुल्क इलाज करते हैं। ऐसे समय में किसी आर्थिक अभावग्रस्त व्यक्ति का निःशुल्क इलाज करना एक यज्ञ के समान है। सबसे बड़ी बात कि वे इस यज्ञ को अकेले सम्पन्न नहीं करते। एक बड़ा ग्रुप है उनका, जिसमें उनकी बेटी और दामाद भी शामिल हैं।

मैं सोचता हूँ कि संघ का एक आदर्श स्वयंसेवक और एक नैष्ठिक हिन्दू उनके जैसा ही होना चाहिए। अपने जीवन को सेवा में बदलने वाला, सेवा के लिए अर्पण करने वाला व्यक्तित्व, अपने बड़प्पन से अनजान अपने जीवन में एक साधारण सहज व्यक्ति के रूप में रहना, ये सब हमारे डॉ.श्याम अग्रवाल जी की विशेषताएँ हैं, जिनके प्रति सम्मान प्रकट करके आज हम सभी ने भी अपना कर्तव्य पूर्ण किया है।

जिनकी सेवा भावना मन को भावविभोर करती है...

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन के प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय में आयोजित होने वाले निःशुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविरों के आधार स्तंभ, उन सभी डॉक्टर्स का चिकित्सकीय विवरण हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं, जिनकी विशेषज्ञता अब तक हजारों अंधेरी आँखों को रोशन कर चुकी है। डॉ.श्याम अग्रवाल के नेतृत्व में यहाँ अपनी समर्पित सेवाएँ प्रदान करने वाले ये सभी डॉक्टर्स मुम्बई के ख्यातनाम अस्पतालों के माध्यम से नेत्र रोगियों का इलाज करते हैं। विगत 18 जनवरी को पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के कर-कमलों द्वारा 'वात्सल्य रत्न' से सम्मानित डॉ.श्याम कहते हैं कि 'यह सम्मान मैं अपने उन सभी साथी डॉक्टर्स को भी समर्पित करता हूँ, जो अपनी इतनी व्यस्त दिनचर्या के बीच समय निकालकर इन शिविरों में आते हैं।'

MBBS, MS, MCPS, DO (Mum)
विशेषज्ञता :
कन्सल्टिंग कैट्रेक्ट एंड रिफ्रेक्टिव सर्जन
अग्रवाल आई हॉस्पिटल एंड
संजीवनी लेसिक सेंटर, मुम्बई
संजीवनी आई हॉस्पिटल, भायंदर
अनुभव - 43 वर्ष से अधिक

डॉ.श्याम अग्रवाल

MS Ophthalmology, DNB
विशेषज्ञता :
कैट्रेक्ट एंड रिफ्रेक्टिव सर्जन
अरिहन्त आई केयर सेंटर
बोरीवली, मुम्बई
अनुभव - 25 वर्ष

डॉ.राहुल जैन

MS, DNB, DOMS, FMRF, FVRF
शंकरा नेत्रालय, चेन्नई
MNAMS, ICO(UK)
विशेषज्ञता :
कन्सल्टिंग आई सर्जन एवं विट्रियो रेटिनल विशेषज्ञ
डायरेक्टर - गुरुकृपा आई एंड रेटिना केयर, लालबाग
अनुभव - 20 वर्ष

डॉ.विशाल राठौर

MBBS, DO, DOMS, FMRF
विशेषज्ञता :
कैट्रेक्ट एंड मेडिकल रेटिना सर्जन
जयपुरिया आई एंड वुमन केयर सेंटर, विरार वेस्ट
जयपुरिया आई केयर सेंटर, नालासोपारा ईस्ट
अनुभव - 20 वर्ष से अधिक

डॉ.आनन्द जयपुरिया

MS,,DNB,,FCPS,,DOMS
विशेषज्ञता :
कैट्रेक्ट एंड रिफ्रेक्टिव सर्जन
माँ आई हॉस्पिटल
भक्ति वेदान्त हॉस्पिटल
कुम्बाला हिल हॉस्पिटल
मानव कल्याण केन्द्र
हितवर्धक हॉस्पिटल
अनुभव - 25 वर्ष से अधिक

डॉ.जुगल शाह

MBBS,,DNB, DOMS (Mumbai).
विशेषज्ञता :
कैट्रेक्ट एंड रिफ्रेक्टिव सर्जन
संजीवनी आई हॉस्पिटल
संजीवनी चन्द्रभान चैरिटेबल हॉस्पिटल
अग्रवाल आई हॉस्पिटल
अनुभव - 12 वर्ष

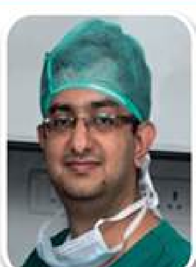

डॉ.मयूर अग्रवाल

DNB Ophthalmology
FICO,,FCRS, FLDR
विशेषज्ञता :
कैट्रेक्ट, कॉर्निया, मेडिकल रेटिना एंड ऑक्यूलर सरफेस
संजीवनी आई हॉस्पिटल, भायंदर
अग्रवाल आई हॉस्पिटल, मलाड, मुम्बई
अनुभव - 12 वर्ष

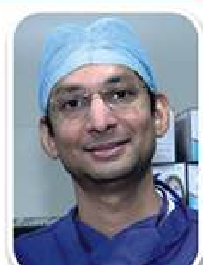

डॉ.अनुज वहुआ

MBBS MS DNB
Ophthalmology
FCRS, FAICO, Refractive Surgery
विशेषज्ञता :
कन्सल्टिंग कैट्रेक्ट एंड रिफ्रेक्टिव सर्जन
लेजर, केराटोकोनस एंड फेकिक
आई ओ एल एस
अग्रवाल आई हॉस्पिटल एंड
संजीवनी लेसिक सेंटर, मुम्बई
संजीवनी आई हॉस्पिटल, भायंदर
अनुभव - 10 वर्ष से अधिक

डॉ.आरती अग्रवाल

MS Ophthalmology, FPRS
विशेषज्ञता :
कैट्रेक्ट एंड रिफ्रेक्टिव (लेसिक)सर्जन
एडमायर आई केयर,
गोरेगांव वेस्ट, मुम्बई
अनुभव - 10 वर्ष

डॉ.सौरभ रामुका

वात्सल्य ग्राम में आयोजित होने वाले नि:शुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविरों के दौरान सभी डॉक्टर्स के साथ एक पैरामेडिकल टीम पूरे समय ऑपरेशन संबंधी विभिन्न प्रक्रियाओं में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं :

श्री माधवप्रसाद अग्रवाल, श्रीमती दर्शनी दुबे, सुश्री श्रीलता, श्रीमती रीना फुर्ताडो, सुश्री आशा गोस्वामी, श्रीमती पारुल दवे, श्री रमाकांत शर्मा और श्री महेन्द्रसिंह

दीदी माँ की सन्तुष्ट मुस्कान का दर्शन करने के लिए हम हर महीने यहाँ नेत्र शिविर का आयोजन करते हैं...

- डॉ.श्याम अग्रवाल

मोतियाबिंद ऑपरेशन के ये शिविर करने का मन हम लोगों का तब होता है कि जब कोई उनमें रस लेता हो। आलोक जी, कोरोना काल में दो वर्ष तक यहाँ वात्सल्य ग्राम में कोई शिविर नहीं हो पाया था तो हम लोगों से ज्यादा इसकी बेचैनी दीदी माँ को थी। दीदी माँ की मुस्कान पाने के लिए हम लोग मुंबई से हर महीने यहाँ आते हैं। जब वह हमारे ऑपरेशंस देखती है ना और उसके बाद जब मरीजों को मिलती है, इस दौरान एक बूढ़ी माँ के सिर पर हाथ फिराते हुए उनकी जो मुस्कान होती है और उनके चेहरे पर जो एक मतलब सैटिस्फेक्शन का भाव होता है, उसको देखने के लिए हम लोग मुंबई से यहां पर खिंचे चले आते हैं।

तो ऐसे शिविरों की सम्पूर्ण व्यवस्था देने के लिए मैं सबसे ज्यादा वात्सल्य ग्राम का ऋणी हूँ। हम लोगों की किसी भी आवश्यकता की सुविधाएँ यहाँ उपस्थित हो जाती हैं। वात्सल्य ग्राम का जो प्रेमवती गुप्ता आई हॉस्पिटल है वो किसी भी प्राइवेट हॉस्पिटल से कम नहीं है। यहाँ आज तक हमारे शिविर में ऑपरेशन के बाद कभी किसी पेशेंट को इंफेक्शन नहीं हुआ। उसके मूल में परम पूज्य गुरुदेव युगपुरुष स्वामी श्री परमानंद जी महाराज का आशीर्वाद और दीदी माँ की अखंड तपस्या है। मैं वात्सल्य ग्राम की टीम के लिए बहुत आभार व्यक्त करता हूँ, उनका ऋणी हूँ, कृतज्ञ हूँ। उसके बाद मेरे जो साथी डॉक्टर्स हैं - डॉ.विशाल राठौर हैं, डॉ.आनंद जयपुरिया हैं, डॉ.जुगल शाह हैं, डॉ. अनुज वहुआ हैं, डॉ.आरती अग्रवाल हैं, डॉ. सौरभ रामुका हैं, डॉ.राहुल जैन हैं, डॉ. विशाल उप्पल हैं, इनके बिना कोई कार्य ही संभव नहीं है। कभी भी, एक भी मरीज को कोई भी तकलीफ इनकी टेबल पर नहीं होती है। उसके बाद यहाँ पर महेंद्र भैया, रमाकांत भैया, मीनाक्षी दीदी और आरती मेरे साथ बहुत सारा मेडिकल स्टाफ आता है। तो उन सबका भी मैं हृदय से धन्यवाद व्यक्त करता हूँ। हमारे दानदाताओं में श्री जयकुमार जी गुप्ता, श्री सुरेश बघेरिया, श्री हरिप्रसाद जी अग्रवाल और श्री देवकीनंदन जी जिंदल जैसे महामना हैं जो शिविरों को प्रायोजित करते हैं। मैं इन सभी का आभारी हूँ। मैं अपने सभी मरीजों का भी बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ, जो हमारे ऊपर विश्वास दिखाते हैं और मैं हमेशा कहता हूँ कि हम वृन्दावन आकर भले ही बिहारी जी के मंदिर में दर्शन करने जा पाएँ ना नहीं लेकिन हमें तो उनके रूप में ही बिहारी जी के दर्शन हो जाते हैं।

जयपुर, राजस्थान में पूज्य जगद्गुरु रामानंदाचार्य श्री रामभद्राचार्य जी महाराज के 77 वें जन्मोत्सव पर उनका वन्दन करते हुए पूज्या दीदी माँ जी। साथ हैं - श्री आई.सी.अग्रवाल एवं श्री संजय भैयाजी

पूज्यश्री के चरणों में

अखण्ड परमधाम, हरिद्वार में पूज्य गुरुदेव अनंतश्री विभूषित युगपुरुष स्वामी परमानंद गिरि जी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए बागेश्वर धाम पीठाधीश्वर श्री धीरेन्द्र शास्त्री जी, पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी, हनुमानगढ़ी, अयोध्या के महंत श्री राजूदास जी तथा महामंडलेश्वर स्वामी श्री ज्योतिर्मयानंद गिरि जी महाराज।

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के आगामी कार्यक्रम

नि:शुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविर

14 एवं 15 फरवरी 2026

स्थान : प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय,
वात्सल्य ग्राम, मथुरा-वृन्दावन मार्ग,
वृन्दावन (उत्तर प्रदेश)

सम्पर्क नंबर
9412277386, 8273858242

अलौकिक धर्म कुम्भ

16 फरवरी 2026

स्थान : नवग्रह शक्तिपीठ मंदिर, डबरा
जिला-ग्वालियर, मध्यप्रदेश

श्रीमद् भागवत कथा महोत्सव

22 से 28 फरवरी 2026

स्थान : पॉलिटेक्निक कॉलेज ग्राउंड, बीकानेर
समय : प्रतिदिन दोपहर 1 से 4 बजे तक

विराट कलश यात्रा - 21 फरवरी

लक्ष्मीनाथ मंदिर से दोपहर 1 बजे से प्रारंभ

आयोजक : सनातन धर्म रक्षा समिति, बीकानेर

सम्पर्क नंबर
8209571121, 9782929333,
9950095895, 9314014999

होलिकोत्सव

2 एवं 3 मार्च 2026

स्थान : वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन, उत्तरप्रदेश
आयोजक : परमशक्ति पीठ एवं वात्सल्य परिवार

राष्ट्रीय वीमेन कॉन्क्लेव

8 मार्च 2026

स्थान : विज्ञान भवन, नई दिल्ली
समय : सायं 4 से 6 बजे तक
आयोजक : संस्था 'शरण्या'

श्रीराम कथा महोत्सव

12 से 18 मार्च 2026

स्थान : मेला मैदान, मनावर (जिला-धार),
मध्यप्रदेश
समय : प्रतिदिन दोपहर 12 से 3 बजे तक
आयोजक
श्रीराम कथा आयोजन समिति, मनावर
सम्पर्क नंबर
9926071200, 7697630076

चैत्र नवरात्रि एवं रामनवमी महोत्सव

19 से 27 मार्च 2026

स्थान : वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन, उत्तरप्रदेश
आयोजक : परमशक्ति पीठ एवं वात्सल्य परिवार

टेलीविज़न पर

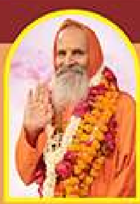

परम पूज्य सद्गुरुदेव युगपुरुष
स्वामी परमानन्द जी महाराज की
परम वाणी

दिशा TV — प्रतिदिन रात्रि 9:30 बजे
Vedic — सोमवार, बुधवार एवं गुरुवार प्रातः 9:30 बजे

परम पूज्य वात्सल्यमूर्ति
दीदी माँ साध्वी ऋतम्भराजी की
वात्सल्य वाणी

संस्कार — प्रतिदिन सायं 7:20 बजे
आस्था — प्रतिदिन प्रातः 8:00 बजे
सत्संग — प्रतिदिन रात्रि 10:00 बजे

Postal Regd. No. DL(E)20/5231/2025-27
DELMUL/2006/16716
Postal Date : 9th & 10th of Every month

An ISO 9001: 2000 Certified School

Samvid Gurukulam Girls Sainik SCHOOL

CBSE affiliated (# 2131180)
Co-Education up to Class Vth; Residential and Day School for Girls
Play Group - Grade XII (Science, Commerce, Humanities)

TECHNOLOGY ENABLED SCHOOL
Powered By : Extramarks

Approved as
Girls Sainik School
by 'Sainik School Society'
Ministry of Defense

We bring out the 'winner in your child'

- State of the art infrastructure
- Low teacher student ratio
- Total Personality Development
- Wi-Fi Campus
- Counseling Cell
- Center of performing arts
- Safe guarding Indian culture as part of world heritage
- Science, Computer & Mathematics Lab
- Regular Excursions
- Centrally Air cooled Hostel for girls.
- SANSKARAM CLASSES: Learning life skills through Value Education
- NANHI DUNIYA: Introduction of children to nature
- SPORTS ACADEMY: Horse Riding, Skating Football, Hockey, Basket Ball, Lawn Tennis, Table Tennis, Judo-Karate, 400M Track
- MUSIC: Vocal & Instrumental
- DANCE: Bharatnatyam, Kathak, Contemporary
- Transport facility available

Vatsalya Gram, Mathura - Vrindavan Marg, P.O. - Prem Nagar,
Vrindavan - 281003 (U.P.) Mobile No. 94127 77152 & 94127 77154
Website : www.samvidgurukulam.org
Like us at : www.facebook.com / samvid4u
email : principal@samvidgurukulam.org